सर्वहारा दृष्टिकोण

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) का मुखपत्र (पाक्षिक)

वर्ष-28 अंक-11 7 से 21 जून, 2013 मुख्य संपादक - कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती मूल्य : 2 रुपये

सरकार जब मुनाफाखोर पूँजीपतियों को लाखों करोड़ रुपये के राहत पैकेज दे सकती है तो तबाह हुए जमाकर्ताओं के लूटे गये रुपये क्यों नहीं देगी

कॉमरेड प्रभाष घोष

(एसयूसीआई(सी) के 65वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में पार्टी की पश्चिम बंगाल राज्य कमेटी के आह्वान पर 24 अप्रैल को कोलकाता के शहीद मिनार मैदान में एक विशाल जनसभा आयोजित हुई। जनसभा में मुख्य वक्ता थे पार्टी के महासचिव कॉमरेड प्रभाष घोष। जनसभा की अध्यक्षता पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के सदस्य कॉमरेड देव प्रसाद सरकार ने की। पार्टी के पोलिट ब्यूरो सदस्य कॉमरेड माणिक मुखर्जी भी मंच पर विराजमान थे। राज्य भर से विभिन्न जिलों से आये किसान-मजदूर, छात्र-नौजवान और महिलाएं हजारों की संख्या में जुलूस निकाल कर सभा में शामिल हुए। पार्टी के अंग्रेजी मुखपत्र प्रोलिटेरियन एरा में छपे कॉमरेड प्रभाष घोष के भाषण का हिन्दी अनुवाद यहाँ प्रकाशित कर रहे हैं। अभिव्यक्ति की कमी-खामी की पूर्ण जिम्मेदारी स.स.दृ. की होगी)

कॉमरेड सभापति, कॉमरेडो और दोस्तो,

एक तरफ तूफानी मौसम और दूसरी तरफ मेरी अस्वस्थता के कारण डाक्टरों की रेस्ट्रीक्टशन और पार्टी के राज्य नेताओं द्वारा लगाई गई समय की पाबंदी के चलते मैं इस ऐतिहासिक दिवस के अवसर पर कुछ बातें कहने की कोशिश करूंगा। कितना कर पाऊंगा पता नहीं, फिर भी जितना हो सकेगा, मैं कोशिश करूंगा।

इस समय राज्य में कई करोड़ लोग चिट फण्ड घोटाले के कारण त्रासदीपूर्ण परिस्थिति में फंस गये हैं। चिट फण्ड की चीटिंग सिर्फ इस राज्य को ही नहीं, बल्कि पूरे देश को सता रही है। हमारा सवाल है कि ऐसा हो कैसे पाया? यह डींग हाँकी जाती है कि भारत दुनिया में सबसे बड़ा लोकतंत्र है। इसके पास राज्यसत्ता का शक्तिशाली तंत्र है, अफसरशाही का भारी भरकम लाव लश्कर है, कानून-व्यवस्था बनाये रखने वाली शक्ति है, शक्तिशाली न्याय-विचार व्यवस्था है, गुप्त जानकारी इकट्ठी करने के लिए केन्द्र व राज्य सरकार की सीआईडी, आईबी, सीबीआई है और तहकीकात करने वाले कई महकमें हैं। इन पर करोड़ों रुपये भी खर्च किये जाते हैं। जनता की जान-माल की सुरक्षा का बन्दोबस्त करना इनकी ही जिम्मेदारी है, उनका ही घोषित लक्ष्य है। इतने सारे महकमों और दण्डात्मक प्रावधानों के होते हुए भी एक आदमी (शारदा चिट फण्ड का मालिक) लाखों लोगों को कैसे इतनी बड़ी चपत लगा सका और उन्हें तबाह कर सका? इसका जवाब कौन देगा? क्या इसकी जिम्मेदारी राज्य को नहीं लेनी होगी? क्या इसके लिए केन्द्र व राज्य सरकार दोनों ही जवाबदेह नहीं हैं? क्या इसकी जिम्मेदारी से पूर्ववर्ती सीपीआई(एम) सरकार अपना पल्ला झाड़ सकती है? उनकी आँखों के सामने ही तो ये सब हुआ है। एक व्यवसायी कहता है कि एक हजार रुपये लेकर उसके बदले वह एक लाख रुपये बना कर देगा! यह क्या जादू-मंत्र है! क्या हम यकीन कर सकते हैं कि ये नेता-मंत्री इससे वाकिफ नहीं थे? सवाल पूछते ही वे एक दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप लगाने लगेंगे। दरअसल पूर्ववर्ती वामफ्रण्ट सरकार के मंत्रियों के साथ मौजूदा तृणमूल सरकार के मंत्रियों की नूरा कुश्ती चल रही है कि दोषारोपण के इस खेल में कौन दूसरे पर दोष मंढ़ने में कितना आगे है। यह वही है जिसे ब्लेम गेम कहते हैं। हमारा मानना है कि ये सभी बराबर के जिम्मेदार हैं। इन सभी ने जानबूझ कर धोखाधड़ी का यह खेल चलने दिया। इनमें से कोई भी इसकी जिम्मेदारी लेने से बच नहीं सकता है।

सरकार ने लोगों को सावधान क्यों नहीं किया

हमारा सवाल है कि केन्द्र सरकार ने इन चिट फण्डों को चलाने की इजाजत ही क्यों दी? स्वाभाविक है कि गरीब लोग अपनी कष्ट कमाई से की गई बचत पर ब्याज के रूप में कुछ ज्यादा धन पाना चाहेंगे। सरकारी जमाखाता योजना में ब्याज घटा कर सरकार ने इस व्यवसाय को निजी हाथों में देकर चिट फण्ड नाम से चीटिंग फण्ड को चलने दिया। यह बात क्या केन्द्र व राज्य सरकार को पता नहीं थी कि सामान्यत: इस तरह धन बढ़ाया नहीं जा सकता और इस तरह ये तथाकथित चिट फण्ड सरेआम सट्टेबाजी और अनैतिक धंधे में लिप्त हैं, जिससे ये लोगों को ठगने और तबाह करने के सबब बनेंगे? इन्होंने मीडिया के जरिये जनता को सावधान क्यों नहीं किया? किस पार्टी ने इन चिट फण्डों के पैसों से चलने वाले अखबारों में कितने विज्ञापन छपवाये हैं, कौन-कौन मंत्री इनकी दैनिक पत्र-पत्रिकाओं के उद्घाटन पर गये हैं, ऐसे चिट फण्ड के एक कर्ताधर्ता के किस नये कारोबार और एम्बूलैन्स सेवा के उद्घाटन के अवसर पर सीपीआई(एम) के पूर्व मुख्यमंत्री गये थे, ये सब खबरें छपी हैं, आगे और भी खुलासे होंगे। वे अब कह रहे हैं कि इस चिट फण्ड के कारोबार में लगे पैसों के स्रोत से वे वाकिफ नहीं थे! आज साफ जाहिर है कि पूर्ववर्ती सीपीआई(एम) सरकार इन 'चीट' फण्डों की संदिग्ध गतिविधियों से वाकिफ थी, इनसे फायदे-सुविधाएं भी लेती थी। फिर, लोग दिखावे के तौर पर उसने एक कानून भी पास किया था जिसे सीपीआई(एम) नेतृत्व अब कह रहा है कि केन्द्र सरकार ने मंजूरी नहीं दी। इसलिए, यह लम्बे अर्से तक लम्बित पड़ा रहा और इन 'चीटिंग' फण्डों के खिलाफ कार्रवाई करने में उन्हें पंगू बना दिया था। गौरतलब है कि उस समय तो कांग्रेस-नीत यूपीए-1 की केन्द्र सरकार उन्हीं के समर्थन से चल रही थी। फिर इतना बड़ा सर्वनाश रोकने के लिए सीपीआई(एम) नेतृत्व ने केन्द्र सरकार पर दबाव क्यों नहीं डाला? पब्लिक को लेकर आन्दोलन करने से उन्हें किसने रोका था? क्योंकि चिट फण्डों के साथ उनके दोस्ताना रिश्ते जो थे। सही मायने में ही सीपीआई(एम) के पूर्व भूमि एवं भूराजस्व मंत्री ने सरेआम भण्डाफोड़ करते हुए कहा है कि सीपीआई (एम) भी दूध की धुली नहीं है। सरकार बदल जाने के बाद जैसे असामाजिक तत्व पाला बदल गये हैं, उसी तरह इन चिट फण्डों के मालिक भी तृणमूल की तरफ झुक गये हैं। इस राज्य की मौजूदा तृणमूल मुख्यमंत्री जिस तरह कह रही हैं, उसी तरह त्रिपुरा के मुख्यमंत्री भी कह रहे हैं कि उन्होंने बुलाया इसलिए उनके कार्यक्रम में चले गये। जिसने बुलाया, उस मेजबान का पूर्ववृत्त उन्होंने मालूम नहीं किया, उसका चरित्र नहीं देखा। ये क्या पब्लिक

(शेष पृष्ठ 2 पर)

कॉमरेड प्रतिभा मुखर्जी का निधन

एसयूसीआई(सी) की पश्चिम बंगाल राज्य कमेटी सदस्य विशिष्ट जननेत्री कॉमरेड प्रतिभा मुखर्जी का लम्बे अर्से तक बीमार रहने के बाद 17 मई को सुबह कलकता हार्ट क्लीनिक एंड हास्पीटल में निधन हो गया। उनकी उम्र 77 साल की थी। उनकी मौत की खबर सुनते ही पोलिट ब्यूरो सदस्यगण कॉ. रणजीत धर, असित भटाचार्य, केन्द्रीय कमेटी सदस्यगण देवप्रसाद सरकार, सौम्येन बसु, छाया मुखर्जी और राज्य सचिवमण्डल सदस्य कॉमरेड हस्पताल गये और माल्यार्पण कर श्रद्धांजली दी। हस्पताल गवर्निंग बॉडी के चेयरमैन प्रो.ध्रुवज्योति मुखर्जी के अलावा डॉक्टरों, नर्सों और अन्य स्टाफ ने भी पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजली दी। वे 1953 में कॉमरेड शिवदास घोष के विचारों से आकर्षित हो कर पार्टी से जुड़ी थी। उन्होंने किसान मजदूरों को संगठित कर कई आन्दोलन चलाये। वे एआईएमएसएस की प्रथम अध्यक्ष रही। वे 1969 में प.ब. में सड़क परिवहन मंत्री बनी। एआईकेकेएमएस और एआईयूटीयूसी के महत्वपूर्ण पदों पर रही। वे लम्बे अर्से से बीमार थी। 3 अप्रैल को हस्पताल में भर्ती कराया गया। डाक्टरों व नर्सों द्वारा इलाज की पूरी कोशिशों के बावजूद उन्हें बचाया नहीं जा सका। उनकी मौत से सभी सदस्य गहरे शोक में डूब गये।

18 मई को उनका शव लेकर शोक जुलूस शुरू हुआ और केवड़ातला श्मशान घाट में उनका अन्तिम संस्कार किया गया। **कॉमरेड प्रतिभा मुखर्जी लाल सलाम**

एसयूसीआई(सी) की मांग–गुजरात को सूखाग्रस्त घोषित करो

एसयूसीआई(सी) ने मांग की है कि गुजरात को सूखा प्रभावित घोषित किया जाए और प्रधान मंत्री से आग्रह किया है कि वे राज्य के सूखा प्रभावित क्षेत्रों का दौरा करें। जहाँ नरेन्द्र मोदी गुजरात को विकास के एक मॉडल के रूप में पेश कर रहे हैं, वहीं तथ्य इसके विपरीत हैं। प्रधानमत्री को भेजे अपने ज्ञापन में एसयूसीआई(सी) ने कहा है कि जहाँ केन्द्र सरकार ने गुजरात के 17 जिलों में 18000 गांवों में से 10000 को सूखा प्रभावित बताया है, वहीं गुजरात सरकार ने दस जिलों के सिर्फ 4000 गांवों को अभावग्रस्त क्षेत्र घोषित किया है।

पार्टी के गुजरात राज्य सचिव कॉमरेड द्वारकानाथ रथ ने मीडिया को बताया कि राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में जैसे भावनगर, राजकोट, जामनगर आदि शहरों के अलावा राजकोट और जामनगर जिलों के अनेक ताल्लुकों सहित सुरेन्द्र नगर के कस्बों और ताल्लुकों में पानी की स्थिति पर सर्वे करवाया गया था। इसने खुलासा किया है कि ज्यादातर क्षेत्रों में समान रूप से पीने के पानी का भयंकर संकट है। पानी का स्तर काफी नीचे चला गया है जहाँ बोरिंग ही एकमात्र स्रोत है। जबकि स्रोत विहीन गांवों में भेजे जाने वाले टैंकरों की संख्या नाकाफी है। नर्मदा केनाल से पानी की सप्लाई अपर्याप्त, अनियमित और अनिश्चित है। कुछ ग्राम पंचायतों में सप्लाई रोक देने की धमकी दी गई है। क्योंकि 12 लाख रुपए तक के बिल लम्बित हैं। पानी का व्यवसायीकरण जोरों पर है जिसके चलते हर परिवार के बजट में 1000रु से 1500रु तक की बढ़ोतरी हो गई है। राहत कार्य कहीं भी शुरू नहीं हुआ है न ही राज्य सरकार ने पीने के पानी या पशुओं के लिए चारे का कोई बन्दोबस्त किया है।

कॉ. प्रभाष घोष का भाषण

(पृष्ठ 1 का शेष)

को इतना बेवकूफ समझते हैं कि नेता जो कुछ बकेंगे, लोग उस पर विश्वास कर लेंगे! किसी अनजान अपरिचित आदमी के द्वारा बुलावा दिये जाने पर, वह किस उद्देश्य से बुला रहा है, उस नेता की मौजूदगी से क्या फायदा उठाने की मंशा रख रहा है–यह सब पता लगाने की परवाह किये बिना भला कोई नेता निमंत्रण स्वीकार करता है? ये सब बातें सही हैं या गलत यह जाने बिना क्या कोई जाता है? कोई आयोजक एम्बुलेंस सेवा के उद्घाटन के लिए मुख्यमंत्री को बुलाये तो यह पता लगाना क्या उनका जिम्मा नहीं बनता है कि आमंत्रित करने वाली संस्था किन गतिविधियों में लिप्त है, उद्घाटन पर जानेंगे नहीं कि वह संस्था क्या करती है। अब तो तृणमूल सरकार को दो साल हो गये। उससे पहले 34 साल सरकार में रहे सीपीआई(एम) के नेता क्या कर रहे थे? हालाँकि इन दोनों पार्टियों में फर्क है। सीपीआई(एम) नेतृत्व काफी धूर्त है, चालाक है! उसके मुकाबले तृणमूल नेतृत्व अभी बहुत कच्चा है, इसलिए आसानी से पकड़ा गया।

हमारा मानना है कि लाखों लाख लोगों को ऐसी वीभत्स कंगाली धकेल देने की पूरी जिम्मेदारी केन्द्र व राज्य सरकार को लेनी होगी। यह कह कर कि भारत के कारपोरेट सेक्टर, एकाधिकारी पूँजीपतियों को नुकसान हो रहा है, इस बार के बजट में केन्द्र सरकार ने उनको साढ़े 5 लाख करोड़ रुपये का अनुदान सरकारी खजाने से दिया है। जो केन्द्रीय सरकार खुद 5 लाख करोड़ रुपये से ऊपर बजट घाटे में चल रही है, उसे एकाधिकारी पूँजीपतियों को तो उतने ही रुपये के बराबर अनुदान देने में कोई दिक्कत नहीं आई। कारपोरेट सेक्टर के प्रति सरकार इतनी दरियादिली है! क्या चिट फण्ड में बुरी तरह तबाह जमाकर्ताओं के लिए यही सरकार कुछेक हजार करोड़ रुपये भी नहीं दे सकती है? देना क्या उसका नैतिक कर्तव्य नहीं बनता है? मौजूदा राज्य सरकार भी यह धनराशि देने में समर्थ है। इस सरकार ने ही तुच्छ चुनावी स्वार्थ में इमामों के भत्तों, क्लबों के चन्दों, अमुक-तमुक इनामों पर लाखों रुपये खर्च किये हैं। फिर चिट फण्डों के हाथों लुटे-पिटे जमाकर्ताओं के नुकसान की भरपाई क्यों नहीं की जानी चाहिए? रक्षा बजट, पुलिस बजट, मंत्रियों, अफसरशाहों, एमएलए, एमपी के वेतन-भत्तों में कटौती करे सरकार। वरना तबाह हुए लाखों लाख लोगों के लिए आत्महत्या करने के सिवा दूसरा और कोई रास्ता नहीं बचेगा। मुख्यमंत्री ने कहा है, 'जो चला गया, सो चला गया, उसे बिसार दो'! इस सब बातों से क्या लुटे-पिटे और विपत्ति में फंसे लोगों के प्रति यह हमदर्दी झलकती है? जो लुट-पिट कर रास्ते के भिखारी हो चुके उन्हें कहा जा रहा है कि धीरज रखो, शान्ति बनाये रखो! इनकी इस मनोवृत्ति को लेकर कहें तो क्या कहें!

दूसरी तरफ सीपीआई(एम)इस ताक में बैठी है कि आगामी पंचायत चुनाव में चिट फण्ड स्कीम उनकी सूखी गंगा में थोड़ा ज्वार ला देगी। यही सब चल रहा है। आपने निश्चय ही गौर किया होगा कि मीडिया के जरिये व्यापक प्रचार करके जिस शासक बुर्जुआ वर्ग ने अभी कल तक तृणमूल को ''पश्चिम बंगाल की मसीहा'' के तौर पर पेश किया था, उसी बुर्जुआ वर्ग ने अब समझ लिया है कि तृणमूल ज्यादा दिन उसकी पसंदीदा चीज नहीं रहेगी। शासक वर्ग के लिए सीपीआई(एम) काफी भरोसेमंद और कारगर है। इसलिए फिर वही मीडिया सीपीआई(एम) को उभारने में लगा हुआ है। जैसे केन्द्र सरकार की सत्ता कांग्रेस और बीजेपी द्वारा बारी-बारी से बांटी जा रही है, उसी तरह इस राज्य में भी दो पार्टियों या गठबंधनों के बीच सत्ता की अदला-बदली का वही जोड़तोड़ चल रहा है। उधर सीपीआई(एम) नेता 'शुद्धिकरण यज्ञ' करके कितने विशुद्ध हो गये हैं, यह तो उनके नेता-कार्यकर्ताओं के काम, बातचीत, चालचलन, आचरण-व्यवहार से साफ जाहिर है। उन्होंने क्या कोई गलती या कसूर माना है? उन्होंने असल में क्या किसी क्षेत्र में अपना सुधार किया है? जब तक वे सरकार में थे, पुलिस-प्रशासन-क्रिमनल वाहिनी का भ्रष्ट गठजोड़ इनकी गिरफ्त में था और रुपयों की थैली उनके पास रही, तब तक सीपीआई(एम) घमण्ड में चूर दनदनाती रही, जनआन्दोलन पर फासिस्ट आक्रमण करती रही, आतंक का राज्य बरपाती रही और लोगों पर हमले करती रही। सरकार गवां बैठने पर ये 'वीर' बिलों में दुबके बैठे हैं और अच्छे दिनों के फिर आने की इन्तजार में हैं। गौरतलब है कि सीपीआई(एम) जिस अन्याय, जुल्म, अत्याचार, भाड़े के गुण्डों के इस्तेमाल और गुण्डागर्दी पर उतर आई थी, अब तृणमूल भी उन्हीं में लिप्त है, अलबत्ता 'परिवर्तन' के नाम पर यह सब कर रही है।

यहाँ मैं एक बात और कहूंगा। शासक पार्टी के ये सब नेता कह रहे हैं कि कानून नहीं होने की वजह से शारदा कम्पनी के खिलाफ सरकार द्वारा कोई कार्रवाई नहीं की जा सकी। सचमुच बड़े कानून मानने वाले लोग हैं! उनकी दलील है कि वे केन्द्र का इन्तजार कर रहे हैं, केन्द्र कानून ही नहीं बना रहा है। नतीजतन, सालों साल बीत गये हैं, इसलिए जो होना था, हो गया। लेकिन मैं उनसे पूछता हूँ कि जनवादी जन आन्दोलन को कुचलने के लिए क्या तुम किसी कानून की परवाह करते हो? कुछ दिनों पहले मेदिनीपुर में प्राइमरी शिक्षकों की भर्ती की परीक्षा में निहायत अव्यवस्था को लेकर हमारे छात्र संगठन का रोष प्रदर्शन था। हमारे डीएसओ के लड़के-लड़कियों को गिरफ्तार कर पुलिस ने जानते हो क्या केस बनाया है? महिलाओं से छेड़खानी का केस! आप खुद देख सकते हैं कि कानून के प्रबल(!) भक्त कैसे काम करते हैं। प्राइमरी शिक्षक परीक्षा में अव्यवस्था को लेकर रोष व्याप्त था, रोष प्रदर्शन करने पर पुलिस ने आन्दोलनकारियों को गिरफ्तार किया, आन्दोलनकारियों पर महिलाओं से छेड़खानी का केस मंढ़ दिया! यह है कानून के पुजारियों का काम। इसके बाद तृणमूल सरकार में आई, तो हमने ही सबसे पहले 8वीं कक्षा तक पास-फेल प्रथा हटाने के खिलाफ रैली की। हाँ मैं कहता हूँ कि शिक्षा को लेकर उस जुलूस में स्कूलों के छात्र-छात्राएं शामिल हुये थे। अचानक अफवाह फैला दी गई कि एक स्कूल के छात्रों को डीएसओ के कार्यकर्ता किडनैप करके जुलूस में ले गये जो इल्जाम सरासर बेबुनियाद था। फिर भी एक तृणमूल नेता के हुक्म पर पुलिस कार्रवाई में कूद पड़ी, डीएसओ कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार किया और उन्हें इल्जामों में लपेट लिया। इन सब मामलों में तो पुलिस कानून की कोई परवाह नहीं करती। सीपीआई (एम) के शासनकाल में कानून अवज्ञा आन्दोलन होता था तो पुलिस की हमारे साथ कुछ धक्कम-धक्का हुई थी। उसमें भी हमारे कितने ही कार्यकर्ताओं पर फौरन अटेम्प्ट टू मर्डर' के मुकदमें बना दिये गये थे। ये मुकदमें 15-20 साल से चल रहे हैं जिससे जन आन्दोलन के कर्मियों को परेशान किया जा रहा है। एनकाउण्टर के नाम पर कितने ही विरोधियों का खून तक कर दिया गया है। मालिकों के हुक्म की तामील पर कितने ही बेकसूरों को झूठे इल्जामों में जेल-हवालात की सलाखों के पीछे ठूंस दिया गया है। इस देश में मालिकों और उनके ताबेदार नेताओं के हुक्म पर पुलिस जन आन्दोलन में भाग लेने वालों को गिरफ्तार पहले करती है, उन्हें सबक सिखाने के लिए उन पर कौन सी धारा लगाई जाए यह बाद में तय करती है। वे सचमुच कानून के बहुत बड़े पुजारी हैं! इसमें कोई शक नहीं। इसलिए दमनकारी मालिकों, कालाबाजारियों, ठगों, लूटेरों के खिलाफ कार्रवाई करने में कोई उपयुक्त (!) कानून नहीं होने से पुलिस मानो बिल्कुल लाचार है।

बड़ी-बड़ी पार्टियों व उनके नेताओं के पास पैसा कहाँ से आता है

आप सब जानते हैं कि हमारे देश में लम्बे अर्से से बड़ी-बड़ी राजनैतिक पार्टियाँ, उनकी सरकार, नेता मनी पावर पर पलते हैं। एकाधिकारी पूँजीपतियों, बड़े-बड़े व्यापारियों, कालाबाजारियों, स्मगलरों, महिलाओं की खरीद-बेच करने वाले अवैध धंधेबाजों, इन चिट फण्डों और इस तरह के दूसरे अवैध धंधेबाजों द्वारा ये धन मुहैया कराये जाते हैं। भारत में चाहे कांग्रेस हो या बीजेपी, या कोई अन्य बुर्जुआ पार्टी हो, वोट आधारित पार्टियों में से एक भी पार्टी ऐसी नहीं मिलेगी जिसके नेता आर्थिक घोटालों में संलिप्त न हों। सीपीआई(एम) को ले लीजिए! पता है सीपीआई(एम) का फण्ड कितना है? चुनाव आयोग में खुद सीपीआई(एम) द्वारा दाखिल कराये गये हिसाब के मुताबिक यह रहस्योद्घाटन हुआ है कि धन के मामले में कांग्रेस, बीजेपी और मायावती की बीएसपी के बाद सीपीआई(एम) का नम्बर है। राह चलते गरीब-गुरबां या दिहाड़ीदार मजदूरों ने इतनी बड़ी रकम उनके फण्ड में नहीं दी है। कहाँ से आया इतना रुपया? क्या यह अनुमान लगाना उतना मुश्किल है? आज इलैक्शन का मायने ही है मनी पावर(धनबल), मसल पावर(बाहुबल), मीडिया पावर(प्रचार बल) और एडमिनिस्ट्रेटिव पावर(प्रशासनिक बल)।

आज का लोकतंत्र 'बाई दि पिपुल, फॉर दि पीपुल, ऑफ द पिपुल' कतई नहीं रहा है। यह हो गया है 'बाई दि मनी पावर, मसल पावर, मीडिया पावर, एडमिनिस्ट्रेटिव पावर'–अवश्य ही सब जनता के नाम की जयजयकार पर हो रहा है। डेमोक्रेसी के नाम पर महज जालसाजी चल रही है। सारी दुनिया में बुर्जुआ यानी पूँजीपति वर्ग जिस जगह आ खड़ा हुआ है, हमारे देश में भी पूँजीपति वर्ग का वही हाल है। बुर्जुआ पार्टियों में मानो एक होड़ लगी हुई हो–कौन कितना रुपया खा सकती है। बीजेपी ने जितना खाया है कांग्रेस उसे पीछे छोड़ कर आगे निकल जायेगी। सीपीआई(एम) ने जितना 34 साल में खाया है, तृणमूल भी इन 24 महीनों में उससे आगे निकल जाएगी। फिर कुछ नेता ऐसे हैं जो बेदाग होने का दिखावा करते हैं; ये रुपये-पैसों को छूने का पाप नहीं करते हैं! लेकिन उनके दाहिने-बांये जो 'नामी गिरामी' लोग हैं, जिन्हें लोगों को किसी भी तरह और किसी हद तक दोनों हाथों से लूटने का मानो लाइसेन्स मिला हुआ है। हालाँकि 'ईमानदार' नेता केवल यही दलील देते हैं कि वे इस लूट-खसोट के बारे में कुछ नहीं जानते हैं, मानो वे अपनी आँखें बंद करके चलते हैं। भ्रम की वजह से आम आदमी सोचता है कि और चाहे जो भी हों, वे तो निस्संदेह 'ईमानदार' हैं! उनके चेले-चाटें ही खराब हैं। मैंने सुना है कि देहात में तृणमूल कार्यकर्ताओं से पूछने पर वे कहते हैं जब उन्होंने 34 साल लूट कर खाया है तो क्या हम न लूट कर खायें? इस तरह रुपये लूट कर खाना मानो अब अधिकार हो गया है! जितने नोच-खसोट करने वाले, प्रोमोटर, भू माफिया, कंट्रेक्टर, क्रिमिनल और पुलिस, बस इन्हीं के सहारे हमारे देश का 'महान' बुर्जुआ लोकतंत्र खड़ा है। इसके बरक्श जरा एक बार सोच कर देखिये, आजादी आन्दोलन के युग में देशबंधु, लाला लाजपत राय, तिलक, सुभाष चन्द्र, भगत सिंह, सूर्यसेन आदि ने राजनीति का कितना ऊंचा स्तर पेश किया था! 'सत्ता की कुर्सी' के लोभी आज के नेताओं ने राजनीति को कहाँ ला छोड़ा है!

यह बुर्जुआ लोकतंत्र कभी सामंतवाद के खिलाफ लड़ कर यूरोप में आया था। उस समय विद्यमान लघु उद्योगों और कुटीर उद्योगों की जगह बड़े उद्योग लगाये गये थे। आत्मनिर्भर क्षेत्रीय बाजार की जगह नवोदित एकीकृत राष्ट्रीय बाजार ने ले ली थी। इन नवस्थापित कल-कारखानों में हर तरह के बंधनों से मुक्त विशाल श्रमशक्ति चाहिए थी। इसलिए सामंती दासता की जंजीरों से भूदासों की मुक्ति का सवाल उठा था। तब प्राकृतिक संसाधनों का इस्तेमाल करने के लिए ज्ञान-विज्ञान व तकनीकी को जानने की जरूरत थी। यह था उदीयमान पूँजीवाद का युग जिसने सामाजिक प्रगति को बढ़ावा दिया। इसे देखकर राजा राममोहन राय, विद्यासागर जैसे भारतीय नवजागरण के अग्रगामी एक दिन मुग्ध हो गये थे। इतिहास का यही मोड़ था जब 'सिविलाइजेशन'(सभ्यता) शब्द आया था। आधुनिक सभ्यता की धारणा यूरोप से आई। लेकिन महान मार्क्स ने दिखाया कि इतिहास के अटल नियम से ही यह पूँजीवाद संकट में फंस जाएगा। क्योंकि पूँजीवाद में उत्पादन का उद्देश्य है मुनाफा कमाना, आजकल अधिकतम मुनाफा कमाना। मजदूरों को वाजिब मजूरी से वंचित किये बिना पूँजीपतियों को मुनाफा नहीं हो सकता। पूँजीवाद को बाजार चाहिए। मानव समाज से नहीं, बल्कि मानव बाजार से है पूँजीपतियों का सरोकार। उनके लिए मूल बात है 'बाजार'। उन्हें हमेशा बाजार चाहिए जिसका मायने है खरीददार। जब तक खरीददार न हों, बाजार नहीं होता। पूँजीवाद में आदमी और कुछ नहीं बल्कि मनुष्यरूपी कच्चा माल है जो मुनाफे की मशीन में चलाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है, मुनाफा कमाने के लिए उसे निचोड़ लिया जाता है। विडम्बना यह है कि इसी निचोड़ने के नतीजन खरीददारों में कमी आ जाती है और बाजार संकट दिखाई देना शुरू हो जाता है।

लोकतंत्र का मजाक उड़ाया जा रहा है, बुद्धिजीवी रहस्यमय चुप्पी साधे बैठे हैं

बुर्जुआ लोकतंत्र के आविर्भाव के युग में यूरोप ने मानवीय मूल्यबोध को महत्व दिया था। लेकिन उसी पूँजीवाद ने विकास क्रम में जब एकाधिकारी पूँजी को जन्म दे दिया, बैंक पूँजी और औद्योगिक पूँजी के मिश्रण के जरिये वित्तीय अल्पतंत्र को जन्म दे दिया और इस प्रक्रिया में विदेशी बाजारों को लूटने के ख्याल से दूसरे देशों में निर्यात किये जाने के लिए वित्तीय पूँजी को जन्म दे दिया और शेयर मार्केट, स्टॉक एक्सचेंज, औद्योगिक उत्पादन, कृषि उत्पादन, सब को कंट्रोल करने और विदेशी बाजार को लूटने के जरिये उन्नततर अवस्था यानी साम्राज्यवादी अवस्था में पहुँच गया, तब लेनिन ने दिखाया कि पूँजीवाद के विकास का पहला वाला युग खत्म हो गया और अब इसके पतन का युग शुरू हो गया। जिस बुर्जुआ वर्ग ने अपने उदयकाल में लोकतंत्र का झण्डा बुलन्द किया था, वह अब लोकतंत्र के हर उसूल को पैरों तले रौंद रहा है। पूँजीवाद आज अपने ही देश की जनता पर शोषण-दमन और दूसरे देशों के लोगों की लूट-खसोट पर जिन्दा है। आपको आज यूरोप में कोई गेलीलियो, न्यूटन, शेक्सपियर, शैले, बायरन, मिल, रूसो-वाल्टेयर, बेकन, फूयरबाख-कांट-स्पिनोजा नहीं मिलता है। एक दिन यूरोप ने इन महान हस्तियों को पैदा किया था। आज यूरोप-अमेरिका पैदा कर रहा है विकृत रुचि और नीच मानसिकता वाले लोग, जो स्कूली बच्चों को अंधाधुंध गोलियों से भून देते हैं, जो स्कूल जीवन में ही यौन दुर्व्यभिचार में लिप्त हो रहे हैं, जो लिव दुगैदर, होमो सैक्सुयलिटी को लीगल करने की माँग कर रहे हैं। यूरोप-अमेरिका आज हरेक तरह की मारक गैसों और हथियारों को तैयार करने का प्रतिष्ठान हो गया है, कितनी जल्दी और कितने ज्यादा लोगों को मारा जा सकता है ऐसा घातक हथियार बनाना उनके शोध का लक्ष्य है। संसदीय जनतंत्र का गढ़ कहलाने वाले अमेरिका-ब्रिटेन की भूमिका आज क्या है? इस अमेरिका और ग्रेट ब्रिटेन ने तेल की लूट और अपना आधिपत्य कायम करने के लिए साजिश रच कर एक झूठी अफवाह फैलायी कि इराकी शासक जनसंहारक हथियार बना रहे थे और उन्हें अगर रोका नहीं गया तो वे पूरी दुनिया को तबाह कर देंगे। इन दोनों देशों की पार्लियामेंट ने इस धूर्तता भरे दावे का ही अनुमोदन किया था और इराक पर हमला किया गया था, उसकी सम्प्रभुता का हनन किया गया था। यह बात आज सारी दुनिया के लोग जानते हैं कि अमेरिका और इंग्लैण्ड द्वारा इराक पर लगाये गये इल्जाम बिल्कुल झूठे, मनगढ़ंत थे। फिर भी ऐसे मनगढ़ंत इल्जामों के आधार पर, सार्वभौम इराक को राख कर दिया गया। लाखों बेकसूर इराकी नागरिकों को मौत के घाट उतार दिया गया; शिक्षणकेन्द्रों, हस्पतालों, मस्जिदों, गाँव-शहरों,

(शेष पृष्ठ 3 पर)

कॉ. प्रभाष घोष का भाषण

(पृष्ठ 2 का शेष)

बेशकीमती पुरातात्विक महत्व के स्थलों को खण्डहर बना दिया गया। हमारे देश सहित किसी भी देश की पार्लियामेंट ने क्या इस क्रूरता का जरा भी प्रतिवाद किया? कहाँ थे बुद्धिजीवी? आज अगर रोमाँ रोलाँ, बर्नाड शा, आइन्स्टीन, रवीन्द्रनाथ जिन्दा होते तो क्या इस घोर अपराध को बर्दाश्त करते? शरतचन्द्र, सुभाष चन्द्र होते तो क्या इस वहशियाना कार्रवाई को बर्दाश्त करते? इराक के बाद अमेरिका-इंग्लैण्ड जोड़ी ने अफगानिस्तान को तबाह किया, लिबिया को तबाह किया और अब सीरिया उनके निशाने पर है। 'स्वतंत्रता और लोकतंत्र' के पूजारी ये सब बुद्धिजीवी लेकिन रहस्यमय चुप्पी साधे हुए हैं। उन्हें कोई परेशानी नहीं है, कोई मर्मवेदना नहीं है, यह उनके जमीर को नहीं कचोटता है। इंटेलैक्च्युअल शब्द का हिन्दी में मायने है बुद्धिजीवी यानी जो अपनी बुद्धि और सोचने-विचारने की शक्ति से निर्देशित होते हैं। लेकिन ये बुद्धिजीवी सामाजिक प्रगति की धारा में साथ देने के लिए, अन्याय के खिलाफ प्रतिवाद करने के लिए बुद्धि से संचालित नहीं होते हैं, बल्कि ये बुद्धि को पैसा और नाम कमाने के लिए इस्तेमाल करते हैं। इनमें से कोई जब प्रतिवाद करता भी है तो इस बात की हर सावधानी बरतते हुए करता है कि उसके प्रोफैशन पर कोई आंच न आये। हैं न कमाल के बुद्धिजीवी!

हालाँकि इन्हीं बुद्धिजीवियों को स्टालिन को अत्याचारी कहने की हमेशा ताक में बैठे पायेंगे। दूसरे विश्वयुद्ध से पहले फासिस्ट जर्मनी की कुख्यात पंचम वाहिनी (गुप्त एजेण्ट प्रोवोकेटेयर) ने रूस सहित बहुत सारे देशों में अपना जाल फैलाया हुआ था। समाजवादी सोवियत यूनियन को बचाने के लिए स्टालिन ने उन्हें धर दबोचा और मुकदमा चला कर उन्हें सजा दी। इस तरह का खुला मुकदमा इतिहास में इससे पहले कहीं नहीं चला। विदेशी राज्याध्यक्षों को कहा गया कि अपने दूत भेजो, मुकदमे की कार्रवाई देखने के लिए कानूनविद भेजो। जो भी वहाँ मौजूद था और जिन्होंने भी मुकदमे की कार्रवाई देखी, इन सभी ने कहा कि इन्साफ हुआ है। रवीन्द्रनाथ, शरतचन्द्र, सुभाष बोस तब जिन्दा थे। उन्होंने इस मास्को मुकदमे के खिलाफ कुछ नहीं कहा, मुकदमे को लेकर कोई सवाल नहीं उठाया क्योंकि वे इस मुकदमे का औचित्य समझते थे। क्या हम यह मान लें कि आज के ये बुद्धिजीवी उन महान हस्तियों से भी बड़े बुद्धिजीवी हैं? मैं पूछता हूँ कि पहला और दूसरा विश्व युद्ध किसने छेड़ा था? रूस ने या साम्राज्यवाद ने? हिटलर को किसने पैदा किया था? सोवियत यूनियन ने या पूँजीवाद ने? हिरोशिमा, नागासाकी शहर किसने तबाह किये थे? सोवियत यूनियन ने या अमेरिकी साम्राज्यवादियों ने? वियतनाम पर वीभत्स आक्रमण किसने किया था? इससे पहले चीन व कोरिया पर हमला किसने किया था? जवाब एक ही है लोकतंत्र के स्वयंभू झण्डाबरदार अमेरिकी साम्राज्यवाद ने। कहाँ है हमारे देश के बुद्धिजीवी? अगर उनमें जमीर नाम की चीज है, अगर वे ईमानदार हैं, अगर उनका दावा है कि वे रुपया-पैसा कमाने के लिए बुद्धि नहीं बेच रहे हैं, तो प्रतिवाद में अपना मुँह खोलें! आज भी जो इराक में हो रहा है, गुयान्तानामो की जेलों में जो हो रहा है उसके खिलाफ अपना मुँह खोलें! वहाँ कैदियों के साथ जो कुछ हो रहा है, उसे मध्ययुगीन बर्बरता कहना भी कम होगा! अमेरिका की जेल चला रहे हैं व्यावसायिक आधार पर प्राइवेट बिजनैसमैन। सरकार ने सभी कुछ उनके हवाले कर दिया है। अमेरिका में रिकार्ड संख्या में केदी हैं। कैदियों से ये बिजनैसमैन 24 घण्टे काम करवाते हैं। यह है 'मुक्त विश्व' का 'मुक्त लोकतंत्र'!

अधःपतित नौजवानों को कौन पैदा कर रहा है

देश पर नजर डालिए। आज भारत में महिलाओं से बलात्कार, सामूहिक बलात्कार, मासूम बच्चियों से दुष्कर्म आये दिन की घटनाएं हो गई हैं। ये क्या ऐसे ही बेवजह हो रही हैं? क्या कोई पैदाइसी बलात्कारी है? भारत में 30-40 साल पहले या 60 साल पहले ऐसी घिनौनी वारदातें क्या किसी ने देखी थी? हाँ, उस समय भी सैक्सुयल एब्रेशन (यौन विचलन) की कुछ वारदातें होती थी। लेकिन ये अपवाद के रूप में होती थी। तब क्या किसी ने सुना था कि तीन साल की मासूम बच्ची या दादी की उम्र की महिला से रेप करके हत्या कर दी गई? ये बलात्कारी कौन हैं? ये नीच बलात्कारी किसने पनपाये हैं? क्या 'सर्वशक्तिमान ब्रह्मा' ने ये पैदा कर डाले हैं या ये इस पतनशील पूँजीवादी सामाजिक व्यवस्था की देन हैं? देश का शासन भार जिन पर है क्या वे इसके लिए जिम्मेदार नहीं हैं?

पूँजीवाद इन्सानियत, इन्सानी गुणों और लोगों के जमीर को खत्म कर रहा है। पूँजीवादी शासक अच्छी तरह जानते हैं कि करोड़ों बेरोजगार हैं, छंटनी किये गये मजदूर हैं और भूखो मरते लोग हैं जो अगर सही क्रान्तिकारी आदर्श से लैस हों और नैतिक मेरूदण्ड सीधा व मजबूत हो, उच्च कोटि का मानवीय बोध हो और जमीर हो तो भूखे लोग कभी न कभी सिर उठायेंगे। इसलिए पूँजीपति लोगों, खासकर नौजवानों को तमाम इन्सानी गुणों और खासियतों से महरूम कर देने पर आमादा हैं। तभी तो वे उन्हें शराबखोरी, जुएबाजी, सट्टेबाजी, नारी देह को लेकर गंदी बातों की तरफ धकेल रहे हैं, टीवी, इंटरनेट और मोबाइल फोनों के जरिये न्यूड पिक्चरों वाले विज्ञापनों, पोस्टरों, गंदे सिनेमा, ब्लू फिल्मों की भरमार कर रहे हैं। साथ ही वे इस देश के मनीषियों, महापुरुषों और क्रान्तिकारियों की याद मिटा डालने और उनकी बजाय छात्र-नौजवानों के सामने आदर्श के तौर पर फिल्म स्टारों, क्रिकेटरों को पेश करने की साजिश रच रहे हैं। सरकार का राजस्व बढ़ाने की दलील की आड़ में हर नुक्कड़ पर शराब की दुकानों की तादाद बढ़ायी जा रही है। यही दलील कभी पूर्ववर्ती सीपीआई(एम) सरकार दिया करती थी, आज तृणमूल सरकार दे रही है। यह है सभी शासक राजनैतिक पार्टियों और उनकी सरकारों का रवैया। ये पोलिटिकल पार्टियाँ ही अपराधी तैयार कर रही हैं। उनका कोई आदर्श नहीं है, युक्ति-तर्क नहीं है, नीति-नैतिकता नहीं है। उन पार्टियों के नेता नहीं चाहते कि उनके कार्यकर्ता किसी आदर्श को मान कर चलें, युक्ति-तर्क करें, नैतिकता अपनायें। क्योंकि तब तो यह नेतृत्व चलेगा नहीं, सवाल कर-कर कार्यकर्ता इनके लिए मुसीबत खड़ी कर देंगे, नेता अपनी पोजीशन नहीं बनाये रख सकेंगे। इससे हो सकता है कि नेता को कुर्सी से नीचे भी उतार दिया जाए। इसलिए युक्तिवादी मनन को मार देने, सोच-विचार को कुंद कर देने, इन्सान को रोबोट, मशीन बना देने का कुप्रयास जारी है। पूँजीवाद का यह गहरा षड्यंत्र है, कांग्रेस, बीजेपी, तृणमूल, सीपीआई(एम), सभी का यह षड्यंत्र है। आपने देखा होगा कि इन पार्टियों के कार्यकर्ता गलियों में काफी कुछ हुलिगनों (बदमाशों) जैसा ही आचरण करते हैं। बंदेमातरम या इन्कलाब जिन्दाबाद का नारा भी लगाते हैं, फिर साथ ही वे शराब पी कर मतवाले भी हो जाते हैं, लड़कियों को भी छेड़ते हैं। उनके सौजन्य से मोहल्ले-मोहल्ले में बेशुमार क्लब खोल दिये गये हैं। वे क्लबों पर पानी की तरह पैसा बहाते हैं ताकि चुनावों में इन्हें इस्तेमाल किया जा सके। इस तरह ये पार्टियाँ समाज में इन्सानियत और जमीर से महरूम बेरोजगार नौजवानों को लेकर एक फौज तैयार करती जा रही हैं। ठीक इसी तरह एक समय जर्मनी में हिटलर ने, नाजियों ने तैयार की थी। उन्होंने नौजवानों को प्रलोभन दिया था कि पैसा मिलेगा, दूसरी बहुत सी सुख-सुविधाएं मिलेंगी–बस उनके बदले में हर तरह की आपराधिक और समाज-विरोधी सेवाएं प्रदान करनी होंगी, दंगे-फसाद करवाने होंगे और विरोधियों को दबाने के लिए उनका खून करना होगा। इस देश में भी वैसा ही हो रहा है। वोट के समय भाड़े के बेरोजगार नौजवानों की ये ताकतें फर्जी वोट डालते हैं, बूथ कैप्चर करते हैं, चुनावों में धांधली करते हैं, विरोधी पक्ष को डराते-धमकाते हैं, मारते-पीटते हैं, जरूरत पड़े तो उनका खून तक कर देते हैं। यही ड्युटी उनको दी जाती है। बदले में साल भर लूटपाट कर खाने, शराब पीने, रेप करने, गुण्डागर्दी करने–जो जी में आये करने का उनको लाइसेन्स दे दिया जाता है। इसी तरह ये पार्टियाँ और नेता क्रिमिनलाइजेशन ऑफ पोलिटिक्स को फाइट(!) कर रहे हैं! दरअसल ये खुद शराफत का मुखौटा पहने हुए अपराधी हैं और नौजवानों को मुखौटाहीन अपराधी बना रहे हैं। सभी के द्वारा यह काम नहीं किया जाने पर भी, इन पार्टियों का एक अंश यह सब करने में लिप्त है। इनकी थाने में पुलिस से सांठगांठ है। इसलिए पुलिस इनके खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं कर सकती है। उल्टे पुलिस का एक हिस्सा भी शराब पीने और रेपिंग में संलिप्त हैं। फिर कुछ ईमानदार अफसर अगर ईमानदारी से काम करने और दब्बू न बनने की कोशिश करें तो आला अफसर उसके हाथ बांध देते हैं। नहीं सुनने पर उनका प्रमोशन रोक दिया जा है या किसी खराब जगह ट्रांसफर कर दिया जाता है।

पश्चिम बंगाल में नैतिकता खत्म करने के लिए प्रधानतः जिम्मेदार है सीपीआई(एम)

सीपीआई(एम) इस मामले में सबसे आगे है। 36 साल पहले पश्चिम बंगाल की सरकार में आने के बाद, सीपीआई(एम) ने जो पहला काम किया वह था तमाम सरकारी महकमों पर अपना कब्जा कायम करना। इसके जरिये सीपीआई(एम)नेतृत्व ने यह सुनिश्चित कर लिया कि सरकार-प्रशासन की सापेक्ष स्वायतता पर लगाम लगा दी जाए और वस्तुतः यह उनका पिट्ठू बन जाए। इस तरह यह संदेश दिया गया कि चाहे किसी का जमीर कुछ भी क्यों न कहे और चाहे कितनी ही दूर तक नैतिक संकोच और न्याय को पैरों तले रोंदा जाए बस शासक पार्टी का पुछल्ला बना रहना और अंधानुसरण करना, इसकी सभी काली करतूतों का मूक तमाशाई बने रहना ही बचे रहने का एकमात्र रास्ता था। इस तरह सीपीआई(एम) ने समाज के नीति-नैतिकता के तानेबाने पर जबरदस्त चोट मारी। उस हद तक कोई भी पार्टी इससे पहले चोट नहीं कर पाई। तृणमूल तो एक क्षेत्रीय बुर्जुआ पार्टी है, उससे उन्नत नीति-नैतिकता व संस्कृति वहन करने की आशा नहीं की जा सकती। लेकिन 'वामपंथ', यहाँ तक कि 'मार्क्सवाद' के नाम पर जो राजनीति सीपीआई(एम) करती है, उसमें भी नीति-नैतिकता या संस्कृति की कोई झलक नहीं मिलती है। नीतिहीन, नैतिकताविहीन राजनीति और घोर संकीर्ण तुच्छ भाई-भतीजावादी पार्टीबाजी करते हुए सीपीआई(एम) ने पश्चिम बंगाल के नौजवानों के

सभा को सम्बोधित करते हुए कॉमरेड प्रभाष घोष

एक बहुत बड़े हिस्से को भटका कर बुराई की दलदल में फंसा दिया है। उन्होंने नौजवानों को यही प्रवचन दिया है कि पार्टी ओर उसके चुनावी स्वार्थ के लिए तुम जो चाहो वह गलत काम कर सकते हो, कितने ही नीचे गिर सकते हो। तुम शराब पी कर मतवाले हो जाओ, राहजनी करो, लड़कियों से छेड़खानी करो और बदमाशी करो, रियल एस्टेट प्रमोटर बनो और गरीबों को उनकी जमीनों से उजाड़ो, तुम्हारे इन दोषों को तब तक नजरअंदाज कर दिया जाता रहेगा जब तक कि तुम सीपीआई(एम) का झण्डा उठाये हुऐ हो, पार्टी को पैसा देते हो, जलसे-जुलूसों में लोगों को जुटाते हो। अगर ऐसी पार्टी के दलबल और दबदबे में इजाफा हो जाए तो इसका नतीजा तबाही मचाने वाला होना ही था, वही हुआ। सीपीआई(एम) की नैतिकताहीन बेशर्म राजनीति के बारे में राज्य के छात्र-नौजवानों को हम 60 के दशक से ही आगाह करते आये हैं। इसलिए देखिये, सरकार बदलते ही सीपीआई(एम) के इन सब दागी अपराधियों, फिरौती मांगने वालों और असामाजिक तत्वों ने कैसे अचानक पाला बदला और शासक तृणमूल की तरफ चले गये हैं। इसी पथभ्रष्ट राजनीति के अंजाम के तौर पर आज पश्चिम बंगाल का यह हाल हो गया है। सीपीआई(एम) ने जहाँ खत्म किया था, तृणमूल ने वहाँ से शुरू किया है। समाज में कुछ लोग आपातदृष्टि से भलेमानस हैं, वे यह मानते हैं कि 'जो कुछ हो रहा है वह अच्छा लक्षण नहीं है।' लेकिन जब कोई उनसे पूछता है कि आपको इन सब के खिलाफ आगे आने से कौन रोकता है। इस पर वे कहेंगे कि यह मुमकिन नहीं है क्योंकि बड़े खराब दिन आ गये हैं। नेक बात कोई सुनता ही नहीं है। इसलिए आफत से बचे रहने की कोशिश में लगे रहते हैं। यह जानते हुए भी कि सक्रिय होने की जरूरत है, फिर भी निष्क्रियता के बचाव में ऐसी दलील देना तो खुद को धोखा देना है, अपने जमीर को टुकड़े-टुकड़े करना है। कभी विद्यासागर अकेले ही पूरे हिन्दू समाज के खिलाफ डट कर खड़े हुए थे। सत्य के लिए जो लड़ते हैं, वे अकेले ही शुरू करते हैं, लड़ते हैं, जरूरत पड़ने पर जान भी दे देते हैं। इसीलिए तो वे बड़े हैं। आज हमारे देश में शिक्षित लोगों, तथाकथित ईमानदार लोगों की एक बहुत बड़ी संख्या है, लेकिन वे बुजदिली दिखा रहे है। महज नौकरी के लिए, ट्रांसफर के डर से, प्रमोशन के लिए जो बात वे नापसंद करते हैं वह भी मान लेते हैं। एक हिस्सा तो यह सब पाने के लिए घिनौनी खुशामद या ओछी चापलूसी ही कर रहा है। वे सोचते हैं कि पैसा मिल रहा है, सुविधाएं मिल रही हैं, नौकरी में प्रमोशन मिल रहा है, इसलिए क्या जरूरत है झमेले में पड़ने की। किंचित कुछ निडर लोग मिलते हैं, उन्हें आम आदमी श्रद्धा के साथ मानता है।

मेरा सवाल है कि 50-60 साल पहले इस देश में क्या युवक नहीं थे? किशोर नहीं थे? यौवन में लड़के-लड़कियों के बीच शारीरिक आकर्षण नहीं होता था? यह तो होता ही रहेगा क्योंकि यह तो इन्सान की फितरत है, यह जीवन का प्राकृतिक नियम है। लेकिन उनमें भद्रता, नम्रता, विवेक था। विवेक आदेश देता है कि प्रवृति या आवेगजनित चाह द्वारा उत्तेजित किये जाने पर उसके प्रत्युत्तर में कुछ भी गवारू स्नायुविक क्रिया करना नहीं, बल्कि विवेक द्वारा संयम बरतो और नियंत्रित क्रिया करो। यह सामाजिक विवेक सामंतवाद और मध्ययुगीन चिंतन के खिलाफ लड़ाई लड़ते हुए राममोहन-विद्यासागर ने जगाया था। बाद में आजादी आन्दोलन ने इसे और भी जगा दिया था। जरा सोचिये तो! उस समय भारत साम्राज्यवाद की गुलामी की जंजीरों में बंधा था। पिछड़ापन व्याप्त था और प्रारम्भिक सुविधाओं से भी वंचित था। गिनती के स्कूल-कॉलेज होते थे। गाँव में स्कूल जाते समय बारिश के मौसम में धोती घुटनों तक चढ़ा कर जाना पड़ता था। बांस के छप्पर में स्कूल होते थे। फिर भी उन दिनों ज्ञान-विज्ञान-साहित्य-संस्कृति के क्षेत्र में चारों ओर ज्योति जल उठी थी। बहुत सारी जानी-मानी हस्तियाँ उभर कर आई थी। जबकि आजादी के बाद नेताओं के सुशासन की बदौलत देश

(शेष पृष्ठ 4 पर)

कॉ. प्रभाष घोष का भाषण

(पृष्ठ 3 का शेष)

में क्या पैदा किया जा रहा है? कुछ चोरों, ढोंगियों और झूठे राजनीतिज्ञों के झुण्ड ही पैदा किये गये हैं, ऐसे घोर अपराधियों, सुपारी लेकर हत्या करने वालों, औरतों की तस्करी करने वालों और ऐसे धोखबाजों के गिरोह पनपाये गये हैं जो लड़कियों को झूठे प्रेमजाल में फंसा कर, अगुवा कर होटल के बंद कमरों में जबरन सैक्स करते हैं और नंगी अश्लील फोटो-विडियो बनाते हैं, फिर वे फोटो-विडियो बेच कर पैसा कमाते हैं, मासूम लड़की से रेप करके गला घोंट कर मार देते हैं। मौजूदा लोकतांत्रिक भारत ऐसे तमाम अपराधों का प्रसूति घर बन गया है। यह है देश की तरक्की का नमूना। समृद्धि कुछ मुट्ठी भर भाग्यशाली लोगों को ही नसीब हुई है। दुनिया के सबसे अमीरों की सूची में भारत के 55 अरबपति एकाधिकारी पूँजीपतियों के नाम उभर कर आये हैं। उन अमीरों का ही 'विकास' हुआ है, उनकी तिजौरियां धन-दौलत से भरती जा रही है। 120 करोड़ लोगों में से 90 करोड़ लोग आज भूखे, अधभूखे की हालत में दिन काट रहे हैं। यही है देश की तरक्की का कच्चा चिट्ठा!

पिछले साल देश में औद्योगिक उत्पादन सरकारी आंकड़ों के मुताबिक 4.6 प्रतिशत था, इस साल यह घटकर 0.6 प्रतिशत तक नीचे आ गया। मैन्युफैक्चरिंग उद्योग ठप पड़ा है। खनन उत्पादन बंध है। आईटी सेक्टर में लाल बत्ती जल रही है। अमेरिका के बाजार में मंदी है, निर्यात का मौका घट गया है। देश में करोड़ों लोगों की छंटनी की जा रही है। कई करोड़ और भी बेरोजगार हैं। भारत में बेरोजगारों के सही आंकड़े जानने का कोई तरीका ही नहीं है। क्योंकि यह ब्रह्मा का देश है, हमारे सब नेता ब्रह्मा के वरपुत्र हैं। वे जो कह दें वही अटल सच है। हालांकि वे सब संकलित आंकड़े अर्थव्यवस्था में तीव्र गिरावट को दर्शा रहे हैं, लेकिन सरकार इसे स्वीकार नहीं करती। उसके मुताबिक देश भर में महज विकास ही विकास हो रहा है!

अमेरिका में हाल ही में चुनाव हुए थे, सिर्फ एकमात्र मुद्दा था कि कौन राष्ट्रपति चुने जाने पर बेरोजगारों को नौकरी दे सकेगा। अमेरिकी अर्थव्यवस्था की दुर्दशा का यह साफ परिचायक है। अमेरिका में लगभग 14 प्रतिशत लोग बेरोजगार हैं। कल के ही अखबार से मुझे पता चला है कि न्यूयार्क में 50 प्रतिशत लोग अधभूखे हैं। ब्रिटिश साम्राज्य को भी जगमगाता सूर्य छिप गया है और वहां भी अंधेरा छा गया है। जर्मनी और चीन की अर्थव्यवस्थाएं डूबती जा रही हैं। भारतीय नेता कह रहे हैं कि बाहरी बाजार नहीं रहा। इसका मायने है निर्यात कम हो रहा है। देश भारी व्यापार घाटे में जा रहा है। विदेशी मुद्रा भण्डार काफी हद तक कम हो गया है। इसलिए यह संकट है। लेकिन एकबार भी यह व्याख्या नहीं करते कि देश को 120 करोड़ आबादी वाले घरेलू बाजार को क्या बीमारी सता रही है। जो बात वे नहीं बताते हैं वह है कि अन्दरूनी बाजार में खरीददार ही नहीं हैं। खरीददार क्यों नहीं हैं? लोगों की तो जेब खाली हैं, लोग कंगाल हैं, गरीब हैं, बिल्कुल तबाह हो चुके हैं। खरीदेदार आयेंगे कहाँ से?

पहले गाँवों के लोग गाँव छोड़ कर कहीं नहीं जाना चाहते थे, यह हमने अपने बचपन में देखा है। लेकिन अब गाँव से लाखों लाख लोग पूरे भारत के गाँव-शहरों में अपनी आजीविका की खातिर दर-दर की ठोकरें खाते घूम रहे हैं। पति, पत्नी, बच्चों का अता-पता नहीं, झुग्गी बस्तियों, फुटपाथों पर रहते हैं। कितने ही बच्चे आवारा पशुओं के शावकों की तरह फूटपाथों पर पैदा होते हैं, चंद दिनों में ही मर जाते हैं, कोई उनकी खोज-खबर भी नहीं रखता है। क्या यह भारत मनमोहन सिंह ने देखा है? क्या नरेन्द्र मोदी जैसे बीजेपी नेताओं को इस भारत की खोज-खबर है? क्या सीपीआई(एम) नेताओं और तृणमूल नेताओं को इन अभागे सर्वहाराओं से कोई सरोकार है? वे कैसे सरोकार रख सकते हैं? वे तो सिर्फ चुनावी गणित का जोड़तोड़ लगाने में, ज्यादा सीटें जीतने के लिए नई-नई चालें चलने और सत्ता हथियाने का वज्रास्त्र इस्तेमाल करने की जुगत में लगे रहते हैं।

केन्द्र सरकार अगर पूँजीपतियों को आर्थिक प्रोत्साहन के तौर पर पाँच लाख करोड़ रुपये दे सकती है तो मैं मांग करता हूं कि वह कम से कम 20 हजार करोड़ रुपये गरीबों को भी दे। क्या गरीब आदमी की जान की क्या कोई कीमत नहीं है? नुकसान या घाटे की बात तो छोड़ ही दीजिए, बल्कि दैत्याकार पूंजीपतियों के मुनाफे में जरा सी कमी आते ही हमारे देश के नेताओं की नींद हराम हो जाती है। अगर टाटा-अम्बानी का लाभ जरा सा कम हो जाये तो ये नेता बड़े बेचैन हो जाते हैं, लेकिन कौन परवाह करता है जब पश्चिम बंगाल के गरीब प्रवासी मजदूरों में से कोई राजधानी दिल्ली के पास नोयडा में निर्माण स्थल पर बिल्डिंग बनाते हुए मारा जाता है या खदानों में खुदाई करते हुए कोई मारा जाता है? आखिर ये गरीब आदमी कौन होते हैं और उनकी जिन्दगी का मोल ही क्या है? ये उनके बारे में ऐसा ही सोचते हैं।

सरकार बदलने से जीवन की समस्याएं हल नहीं होती

लोग हताश हैं। वे पूछते हैं कि सरकार बदलने से क्या बदलाव आया? हम भी कहते हैं कि जहां तक जीवन की ज्वलंत समस्याओं का सवाल है कोई बदलाव नहीं आया है। यह हम केवल अभी नहीं कह रहे हैं, बल्कि पिछले लोकसभा और विधानसभा चुनाव से पहले हमने इस तथ्य की ओर बार बार ध्यान दिलाया था कि सरकार बदल सकती है, लेकिन जीवन की समस्याएं दूर नहीं होंगी। 2011 के विधानसभा चुनाव से ठीक पहले पार्टी स्थापना दिवस पर इसी शहीद मिनार मैदान में हुई सभा में मैंने खुद इस बारे में चर्चा की थी। अगर जरूरी हो तो मैं अपने भाषण के संबंधित अंश को पढ़ कर सुना सकता हूँ। पूँजीवादी व्यवस्था बरकरार है, मजदूर-मालिक उत्पादन संबंध बरकरार हैं, शोषण बढ़ता जा रहा है, कालाबाजारी का बोलबाला है, ऐसे में अगर कोई सरकार सचमुच में इन सब का मुकाबला करना चाहे, अफसरशाही-पुलिस-प्रशासन को कुछ काबू में रखना चाहे, चोरी-भ्रष्टाचार पर कुछ हद तक अंकुश लगाना चाहे और गरीबों को कुछ राहत प्रदान करने की कोशिश करे तो पूरी सम्भावना है कि पूँजीवादी राज्यसत्ता और शासक पूँजीपति वर्ग द्वारा उस सरकार को गिरा दिया जाएगा। यह सब जानते हुए भी कोई सरकार अगर उपरोक्त रास्ते पर दृढ़ता के साथ चलना चाहे तो लोगों पर बढ़ते हुए हमले रोक सकती है, उनकी समस्याओं को कुछ कम कर सकती है। लेकिन मैंने उस समय भाषण में साफ कहा था कि तृणमूल ऐसा करेगी यह हमारा मानना नहीं है। अन्य बुर्जुआ पार्टियों और सीपीआई (एम) की तरह ही तृणमूल भी सरकार चलायेगी। कोई फर्क नहीं होगा। यह बात मैंने साफ कर दी थी। मैंने ये भी कहा था कि सीपीआई(एम) लाठी-गोली से जन आन्दोलन को बर्बरता से कुचल रही थी, तृणमूल अगर चाहे तो इस हमले को कुछ हद तक कम कर सकती है। उसके बाद कहे गये शब्द 'अगर' पर गौर कीजिए। हमने जोर दिया था कि तृणमूल अगर चाहे तो कम कर सकती है। इसके बावजूद, हमने तृणमूल का गत विधान सभा व लोकसभा चुनाव में समर्थन किया था। क्यों किया था यह भी खुली सभा करके बताया था। सीपीआई(एम) सरकार ने आन्दोलन का दमन करने के लिए नंदीग्राम-सिंगूर में नरसंहार कराये और सामूहिक बलात्कार करवाये जो इससे पहले कभी आन्दोलन का दमन करने के लिए कांग्रेस व बीजेपी ने भी नहीं कराये, साम्प्रदायिक दंगों में ऐसा हुआ है। ऐसे में सीपीआई(एम) जीती तो जन आन्दोलन पर अत्याचार और भी भयंकर रूप ले लेंगे। पूँजीपति वर्ग के आशिर्वाद और कांग्रेस के साथ सांठगांठ से 34 साल सत्ता में रहने से उनमें बड़ी भ्रष्टता, सत्तालोलुपता, डोन्ट केयर की मानसिकता आ गई थी। इस जगह हमने जरा झटका देना चाहा था। सिंगूर-नंदीग्राम से पहले हमने कभी 'सीपीआई(एम) हटाओ' का नारा नहीं दिया। अपना खून बहाते हुए हम सीपीआई(एम) सरकार के हमलों और जुल्मों के खिलाफ लड़े, लेकिन सरकार हटाओ का नारा हमने इससे पहले नहीं दिया था। यह पहली बार ही था जब हमने यह माँग उठायी थी।

एक बात और रेखांकित करना चाहता हूँ। सिंगूर- नंदीग्राम आन्दोलन हमने गठित किये थे। यह बात पत्रकार जानते हैं, लेकिन मालिक नहीं चाहते हैं कि यह बात सार्वजनिक हो। दोनों ही आन्दोलन हमने संगठित किये थे। वहाँ की जनता जानती है। लेकिन अकेले अपने दम पर हम सीपीआई(एम) सरकार के पाश्विक हमलों का मुकाबला कर इन आन्दोलनों की रक्षा नहीं कर पाते। तृणमूल बुर्जुआ पार्टी है, मीडिया की पसंदीदा पार्टी है। अगर तृणमूल आन्दोलन में आती है तो यह अपेक्षित था कि मीडिया से व्यापक प्रचार होगा, इन ऐतिहासिक आन्दोलनों के बारे में पूरा देश जान जाएगा। हमारे अकेले के करने से ऐसा नहीं होता। तृणमूल वोटों को मद्देनजर रख कर, एंटी सीपीआई(एम) सेन्टीमेन्ट को वोटों में इस्तेमाल करने के लिए आन्दोलन में आना चाहती थी। जबकि हमारा मकसद था जोरदार संगठित प्रतिरोध आन्दोलन करके किसानों की जमीन बचाना और आन्दोलन के भंवर में लोगों को खींच कर उनमें आवश्यक राजनैतिक चेतना देना, जायज माँग हासिल करने के लिए जनआन्दोलन की जरूरत से अवगत कराना। इसी साफ मकसद से ही हमने उस समय आन्दोलन के स्वार्थ में तृणमूल के साथ एकता कायम की। फिर भी हमने शुरू से ही पार्टी से पार्टी का रिश्ता नहीं जोड़ा, बल्कि आन्दोलन को नेतृत्व देने के लिए जन संघर्ष कमेटियाँ बनाने पर बल दिया। सिंगूर जमीन रक्षा कमेटी, नंदीग्राम भूमि उच्छेद प्रतिरोध कमेटी, हमारे सुझाव पर गठित हुई थी।

नंदीग्राम आन्दोलन की धारावाहिकता में ही चुनाव आये। मीडिया ने सिंगूर-नंदीग्राम आन्दोलन में तृणमूल को ही प्रचार दिया। संघर्षरत लोगों के बीच आन्दोलन के जज्बे को बरकरार रखने के लिए और सीपीआई(एम) को परास्त करने के लिए हमने चुनाव में तृणमूल के साथ एकता कायम करने का फैसला लिया। लेकिन हमारा एकता प्रस्ताव सशर्त था। उस मोड़ पर तृणमूल हमारी तमाम शर्तें मानने को मजबूर हुई। हमने अन्य शर्तों के साथ हमने यह भी कहा था कि तृणमूल चुनावी प्रचार के दौरान मार्क्सवाद-वामपंथ पर हमला नहीं करेगी। अगर हमने यह शर्त नहीं लगाई होती तो सीपीआई(एम) पर निशाना साधने के नाम पर लोकसभा-विधानसभा चुनाव में पूरा प्रचार ही वामपंथ और मार्क्सवाद के खिलाफ चला जाता। थोड़ा सा होने पर भी हमने ऐसा होने से रोका। हमने कह दिया था कि हम सरकार में नहीं जाएंगे। यहाँ कॉमरेड माणिक मुखर्जी बैठे हैं। तृणमूल नेतृत्व ने उनसे सरकार में शामिल होने का आग्रह किया था। लेकिन उन्होंने इस प्रस्ताव को सिरे से खारिज कर दिया था। इससे पहले सीपीआई(एम)ने भी हमसे एमएलए, एमपी सीटों की पेशकश की थी। ऐसी ही पेशकश तृणमूल की तरफ से आई थी। क्या हमने स्वीकार की? नहीं, हमने नहीं की।

सीपीआई(एम) की हार के साथ-साथ तृणमूल का भी पर्दाफाश करना था हमारा मकसद

हमने जैसे सीपीआई(एम) की हार चाही थी, वैसे ही हम तृणमूल का चरित्र भी उजागर कर देना चाहते थे। हम चाहते थे कि एक बार सत्ता में आने के बाद तृणमूल के बारे में लोगों को सही-सही अहसास हो जाए। अब लोगों को ऐन वही अहसास हो रहा है। अब लोगों में चर्चा का विषय है कि तृणमूल भी सीपीआई(एम) के नक्शे कदम पर चल रही है। सीपीआई(एम)जो घिनौना रास्ता लेकर चली थी, तृणमूल भी उसी रास्ते पर चल रही है। सीपीआई(एम) के रास्ते को तो लोग आज भी धिक्कारते हैं। जो कुकृत्य सीपीआई(एम)नेताओं ने अपने शासनकाल में किये थे, वे किसी तरह भी उनके चेहरे पर मुस्कान आने नहीं देते। मौजूदा गंदा माहौल तो उन्हीं की देन है। यह सच है कि हम चुनावों में तृणमूल का समर्थन नहीं करते तब भी मार्क्सवाद-वामपंथ के खिलाफ निन्दा अभियान चलाते हुए वह विधान सभा व लोकसभा दोनों चुनाव में जीत जाती। यह एक वास्तविकता थी क्योंकि उस समय पश्चिम बंगाल में सीपीआई(एम)-विरोधी मानसिकता इतनी जबरदस्त थी। ब्रिटिश शासनकाल से ही पश्चिम बंगाल वामपंथ का गढ़ था, गाँधीवादी यहाँ सिर नहीं उठा पाये, पचास और साठ के दशक के दौरान जुझारू वामपंथी आन्दोलन के उभार से पश्चिम बंगाल सराबोर हो गया था, '60 के दशक में वाम-जनवादी ताकतों को लेकर दो संयुक्त मोर्चे की सरकारें बनी थी, यहाँ दक्षिणपंथी ताकतों द्वारा सिर उठाने देने के लिए कौन जिम्मेदार है? अलिमुद्दीन स्ट्रीट (कलकत्ता में सीपीआई(एम) का राज्य मुख्यालय)के नेताओं को ही इसका पूरा श्रेय जाता है। यह वह सरजमीं है जहाँ ब्रिटिश साम्राज्यवादी शासनकाल में भी दक्षिणपंथी अपने पाँव नहीं जमा पाये थे, जहाँ सुभाष बोस-शरतचन्द्र-नजरूल की जीवंत उपस्थिति ने हरेक को प्रेरित किया था, जहाँ विप्लववाद का गढ़ था और रूसी व चीनी क्रान्तियाँ सफल होने के बाद जहाँ लोग कम्युनिज्म की तरफ गहराई से आकर्षित हुए थे। सीपीआई(एम) के नेताओं ने अपनी पार्टी के प्रभाव को विस्तारित करने के लिए लोगों की इस वाम परस्त, साम्यवाद परस्त भावना को भुनाया था-उन्हीं सीपीआई (एम) नेताओं ने इस सरजमीं को चांदी की तस्तरी पर रख कर दक्षिणपंथियों के हवाले कर दिया। इसका भारी श्रेय निस्संदेह उन्हीं को जाता है। जबकि इसके विपरीत, हम वामपंथ व कम्युनिज्म के उच्च आदर्श के परचम को अपनी पूरी ताकत लगा कर बुलन्द किये हुए हैं। हमारी राजनीति वोट बटोरू राजनीति नहीं है। अगर हम आगामी लोकसभा या विधानसभा चुनाव में हार भी जायें तो क्या फर्क पड़ता है? लोगों को संगठित करते हुए हम जीतने के लिए निश्चय ही जीजान से लड़ेंगे। अपनी तमाम कोशिशों के बावजूद हम हार भी सकते हैं। लेकिन इससे क्या हमारी पार्टी की प्रगति रुक जाएगी? हमारी पार्टी दिन दुगुनी रात चौगुणी किसलिए बढ़ रही है? यह महान मार्क्सवादी चिन्तनकार कॉमरेड शिवदास घोष का देदीप्यमान चिन्तन ही है जो हमारे प्रति आकर्षण की लहरें पैदा कर रहा है, क्रान्तिकारी शिक्षाओं से लोगों को लैस कर रहा है। क्या सत्य को विजयी होने से कोई रोक सकता है? चुनाव में हार का खतरा दिखाकर हमें डराया नहीं जा सकता। हमे असली इन्सानों की तलाश है, ऐसे इन्सान जिनमें सच्ची हृदयवृत्ति हो, जिनका जमीर जिन्दा हो। तमाम चुनावसर्वस्व पार्टियाँ लोगों को वोटरों के रूप में देखती हैं, दूसरी तरफ हम उन्हें शोषित-पीड़ित गरीब अवाम के रूप में देखते हैं। उनकी ईमानदारी और सूक्ष्म अनुभूतियों को उभारने और चेतना के स्तर को उठाने की कोशिश करते हैं। हमारी पार्टी का मूल मंत्र ही है आदर्श से, ईमानदारी, शालीनता और चरित्र के जरिये लोगों का दिल जीतना। यही हैं कॉमरेड शिवदास घोष की शिक्षाएं।

हम चाहते हैं भले ही कम लोग हों, पर बेहतर हों। सच्चे इन्सान हों। आज अगर हम चाहें तो प्रतिक्रियावादी ताकतों के आगे हाथ पसारने पर हमें करोड़ों रुपये मिल सकते हैं। विभिन्न राज्यों में, जिलों में, इलाकों में दफ्तर पर दफ्तर खोल सकते हैं। पैसों के प्रलोभन से नौजवानों के झुण्ड के झुण्ड अपनी तरफ खींच सकते हैं। इस तरह पार्टी का विस्तार तो हो सकता है, लेकिन अपना क्रान्तिकारी चरित्र, महान शिवदास घोष की शिक्षा से संचालित व निर्देशित एक सही मार्क्सवादी पार्टी की अपनी अलग पहचान बरकरार नहीं रख पायेगी। ऐसी एक पार्टी शोषित-पीड़ित लोगों का भला नहीं कर सकती, बल्कि नुकसान ही पहुंचायेगी। हमारे लिए क्रान्तिकारी आदर्श और नैतिकता सबसे बड़ी चीज है, जिसके बल पर हम सर ऊंचा करके चलते हैं, हमें कोई खरीद नहीं सकता है। हम तिकड़मबाजी की राजनीति, धूर्तता

(शेष पृष्ठ 5 पर)

कॉ. प्रभाष घोष का भाषण

(पृष्ठ 4 का शेष)

की राजनीति नहीं करते। हम सच बात, सीधी बात सीधी-सादी भाषा में कहते हैं। किसी मीडिया पब्लिसिटी के लिए हम लालायित नहीं रहते और इसलिए उनके दरवाजे पर भीख नहीं मांगते। किसी औद्योगिक घराने, कारपोरेट सेक्टर या किसी ऊपरी तबकें से हमारा कोई सम्पर्क या रिश्ता नहीं है। पार्टी कॉमरेडों, समर्थकों और हमदर्दों द्वारा खुले दिल से दिये चंदे से हमारी पार्टी का केन्द्रीय कार्यालय बना रहे हैं। चूंकि उससे काम नहीं चल रहा इसलिए अब हम आम लोगों से चंदा देने की अपील कर रहे हैं। इसी तरीके से हम अपनी पार्टी चला रहे हैं।

मैं लोगों का आह्वान करता हूँ कि वे एक प्रासंगिक विषय पर विचार करें। अगर आप इस सोच से ग्रसित हैं कि 'हर कोई खराब है', ' हर चीज खराब है', 'कुछ भी सकारात्मक नहीं होने वाला है' और आहें भरते हैं। घोर सनकीपन में डूबने के सिवा इससे आपको और क्या हासिल होगा? समाज रसातल में जा रहा है। हो सकता है कोई आज भोजन और आवास के मामले में जरा बेहतर हालत में हैं लेकिन क्या गारण्टी है कि उसके बेटा या नाती एक दिन आवारागर्दी नहीं करेगा या किसी बच्ची का रेप नहीं करेगा? क्या इसका कोई भरोसा है कि वह साठ साल की वृद्धा का रेप और मर्डर नहीं करेगा? जो माहौल है, उसमें इस चौतरफा अध:पतन को कौन रोक सकता है? जो बुद्धिजीवी रवीन्द्रनाथ को लेकर सभाओं में जोरशोर से भाषणबाजी करते रहते हैं, क्या वे इस पर विचार करते हैं? इस सन्दर्भ में रवीन्द्रनाथ द्वारा कही कुछ बातें आपके सामने पेश करना चाहता हूँ। रवीन्द्रनाथ जिन्होंने प्रकृति के सौन्दर्य का गुणगान करने के लिए कविताओं और गानों की रचना में अपना अधिकतर जीवन लगा दिया, उन्होंने अपने जीवन के अन्तिम पड़ाव पर 1937 में ये पंक्तियाँ लिखी थी: 'शक्ति दो, शक्ति दो मोरे, कण्ठ मोर आनो वज्र वाणी, शिशुघाती, नारीघाती कुत्सित वीभत्सा परे धिक्कार हानिते पारी जेनो, नित्यकाल रबे जार स्पन्दित लज्जातुर ऐतिहेयर हृतस्पन्दने, रुंद्ध कण्ठे भयार्त एइ श्रृंखलित युग जबे, नि:शब्दे प्रछन्न हबे आपन चितार भस्मतले'।

बुर्जुआ सभ्यता के संकट ने रवीन्द्रनाथ को बेचैन कर दिया था

ये कौन रवीन्द्रनाथ हैं? क्या यह वहीं आदमी हैं जो हेमंत, बसंत, पौष प्रकृति को लेकर डूबे रहते थे? जिस रवीन्द्रनाथ ने सशस्त्र विपल्ववाद का विरोध किया था, उन्होंने क्यों जीवन के अन्तिम पहर में यह लिखा था, 'नागिनीरा चारिदिके फेलितिच्छे विषाक्त नि:श्वास, शान्तिर ललितवाणी शोनाइबे व्यर्थ परिहास।. .. विदाय नेबार आगे ताइ डाक दिये जाइ, दानवेर साथे जारा संग्रामेर तरे प्रस्तुत होयेतेच्छे घरे घरे'। रवीन्द्रनाथ जो मुख्यत: 'कला के लिए कला' की सोच में विश्वास करते थे और इसलिए देश के आजादी आन्दोलन में सीधे-सीधे शामिल नहीं हुए थे, उन्होंने ही अपने अन्तिम जन्म दिन पर 'सभ्यता का संकट' शीर्षक से अपने भाषण में कहा था, 'एकदिन आया जब महज साहित्य का रसपान करने के दायरे से मुझे बाहर आना पड़ा। भारत की जनता की विकराल गरीबी की जो नग्न वास्तविकता मेरे सामने उजागर हुई वह हृदयविदारक थी।' पाश्चात्य बुर्जुआ संसदीय सभ्यता में विश्वास खो कर उन्होंने कहा था, ' मैं एक समय विश्वास करता था कि सभ्यता का झरना यूरोप के हृदयस्थल से बहेगा लेकिन आज जब मैं दुनिया को अलविदा कहने को हूँ मेरा वह विश्वास पूरी तरह डोल गया है।' क्या रवीन्द्रनाथ के ये तथाकथित भक्त प्रकृति और आध्यात्मिकता पर उनकी रचनाओं से अभिभूत हैं, जो पश्चिमी संसदीय जनतंत्र के जयगान में मुखरित हैं, क्या वे रवीन्द्रनाथ की उपरोक्त टिप्पणियों से वाकिफ हैं? क्यों रवीन्द्रनाथ अपने समतुल्य मानवतावादी मनीषियों रोमां रोलां, जार्ज बर्नाड शा, आइन्स्टीन की तरह ही पश्चिमी बुर्जुआ सभ्यता से निराश-हताश हो कर जीवन के अन्तिम पहर में सोवियत समाजवाद की ओर आकर्षित हुए थे–क्या यह आजकल के रवीन्द्रप्रेमी जरा सोच कर देखे हैं? इन रवीन्द्रनाथ ने रूस के बारे में बहुत सारी महत्वपूर्ण बातें कही थी। आप जानते हैं कि रवीन्द्रनाथ ने रूस की चिट्ठी में कहा था कि फ्रांस जो बराबरी- मैत्री-आजादी के जिस विचार को अपनी सरजमीं पर लागू नहीं कर पाया, उसे रूस में सफलतापूर्वक लागू किया गया था। रवीन्द्रनाथ ने दृढ़ता के साथ कहा था कि दुनिया में रूस ही एकमात्र देश है जिसने पहले पहल लीग ऑफ नेशन्स में घोषणा की थी कि तमाम घातक हथियारों को नष्ट किया जाए। कोई और देश यह बात नहीं कह पाया। रवीन्द्रनाथ ने यह भी माना था कि सोवियत यूनियन की यात्रा उनके जीवन की श्रेष्ठ तीर्थयात्रा थी।

रवीन्द्रनाथ ने सिर्फ सोवियत में ही देखा था आशा और आनन्द का स्थायी स्रोत

आप में से कई नहीं जानते होंगे कि रवीन्द्रनाथ ने 1939 में सोवियत रूस के बारे में अत्यन्त महत्वपूर्ण बात कही थी। इसे पढ़ कर रवीन्द्रनाथ के प्रति मेरी श्रद्धा काफी बढ़ गई थी। मुझे पहले भी लगता था कि रवीन्द्रनाथ और गाँधीजी बिल्कुल एक जैसे नहीं हैं। हालाँकि दोनों ही क्रमश: संस्कृति और राजनीति के क्षेत्र में भारतीय नवजागरण की समझौतापरस्त धारा के पैरोकार थे। गाँधीजी ईमानदार थे, लेकिन बड़े दकियानुसी थे। नये सत्य को स्वीकारने का मन उनका नहीं था। रवीन्द्रनाथ भी परम्परावाद के बैरियरों से बाहर नहीं आ सके, यह बात सही है, लेकिन उस सीमाबद्धता के बावजूद, उनमें नये को देखने की दृष्टि थी। 1939 में कवि अमिय चक्रवर्ती को उन्होंने लिखा था, 'जब मैं सामने इतनी बड़ी दुर्भेद्य निरुपायता देखता हूँ, तो मुझे तुरंत अहसास हो जाता है कि कमजोरों के प्रति निर्मम हो गई इस सभ्यता को जड़ से उखाड़ फेंके बिना, अमीरों के डाइनिंग टेबल से उपेक्षा से फेंके हुए रोटी के जूठे टुकड़ों पर हम और ज्यादा जिन्दा नहीं रह सकते। सभ्यता में यह बदलाव लाने का प्रयास मैंने रूस में देखा।...इसकी बहुत सारी कमियों के बावजूद, मानवता का नया रूप इस तपोभूमि पर देख कर मैं आनन्दित और आशान्वित हुआ था।' कह रहे हैं, 'मानव इतिहास में और कहीं आनन्द और आशा का ऐसा एक स्थायी स्रोत मैंने कभी नहीं देखा। मैं जानता हूँ कि रूस में एक बड़ी भारी क्रान्ति के आधार पर इस नवयुग की स्थापना की है। लेकिन यह क्रान्ति मनुष्य के सबसे निष्ठुर और प्रबल शत्रु के खिलाफ है। यह क्रान्ति काफी दिनों के पाप के प्रायश्चित का विधान है। नये रूस में मानव सभ्यता के सीने पर से एक बहुत बड़ी मृत्युशिला उठाने की साधना की जा रही है जिसे कहते हैं लोभ। मन से यह दुआ अपने आप ही निकलती है कि उनकी यह साधना सफल हो।' कृपया गौर कीजिए, रवीन्द्रनाथ कह रहे हैं कि सोवियत समाजवाद मानव सभ्यता के सीने से मौत के पत्थर को हटाने की कोशिश कर रहा है। यह उन जैसे आदमी के लिए कितनी बड़ी सत्योपब्धि है। अब तक धार्मिक चिन्तन ने प्रचारित किया था कि पाप, लोभ और ईर्ष्या शाश्वत है। ये शब्द सदा रहेंगे। धर्म के द्वारा इन पर केवल अंकुश लगाना होगा। बुर्जुआ प्रचारकों ने भी कहा है कि ये अपरिवर्तनीय मूल प्रवृत्तियाँ हैं जिन परं नियंत्रण रखना होगा। मार्क्सवाद ने ही पहले पहल कहा है कि ये कोई भी शाश्वत मानसिक विशेषताएं नहीं हैं, न ही ये शुरू से ही समाज में थीं, निश्चित सामाजिक-ऐतिहासिक कारण से सामाजिक क्रान्ति के एक खास दौर में प्रकट हुई और सामाजिक रूपांतरण के अमोघ नियम के चलते खत्म भी हो जाएंगी। एक उत्पादन व्यवस्था के आधार पर ही भाव जगत या मनन जगत का ऊपरी ढांचा गठित होता है और परिवर्तनशील है। कॉमरेड शिवदास घोष ने दिखाया था कि लोभ से गैरबराबरी नहीं आई, बल्कि गैरबराबरी के आधार पर गठित वर्ग-विभाजित समाज ने ही लोभ पैदा किया है। फिर वर्ग-विभाजन के खात्मे के बाद मानव समाज से लोभ का भी खात्मा हो जाएगा। मार्क्सवादी नहीं होते हुए भी रवीन्द्रनाथ यह समझ सके कि रूस की नई समाजवादी सभ्यता मानव समाज से लोभ खत्म करने के लिए ऐतिहासिक संघर्ष चला रही है और उन्होंने इसका गहरी श्रद्धा एवं आवेग के साथ समर्थन किया। रवीन्द्रनाथ के इन तथाकथित प्रशंसकों के साथ-साथ सोवियत-विरोधी कुत्सा प्रचार में जोरशोर से लिप्त बुद्धिजीवियों को रवीन्द्रनाथ के इस विचार की क्या कोई जानकारी है? क्या वे इतिहास से वाकिफ हैं? जब दूसरा विश्वयुद्ध अपने चरम पर था, रवीन्द्रनाथ का ऑपरेशन होना था। जाने-माने सांख्यकीविद प्रशांत महलानविश उनके पास थे। रवीन्द्रनाथ ने उनसे पूछा कि सोवियत आर्मी कितनी आगे बढ़ी है? महलानविश ने बताया कि लाल फौज पीछे हट रही है। दु:ख के साथ रवीन्द्रनाथ ने अखबार पटक दिया। फिर ऑपरेशन के दिन जब उन्हें पता चला कि सोवियत फौज जीत की ओर अग्रसर है तो खुशी से उनका चेहरा खिल उठा। उन्होंने हर्षोल्लास भरे स्वर में कहा, 'वे, सिर्फ वे ही सभ्यता की रक्षा कर सकेंगे।' सोवियत समाजवाद पर वे कितना गहरा भरोसा व्यक्त कर गये हैं!

ऐसा नहीं है कि रवीन्द्रनाथ के विचार उनके जीवन के आखिरी दिनों में बिल्कुल आमूलचूल बदल गये थे। नहीं, ऐसी बात नहीं थी। गहरे अफसोस के साथ वे 'एकतान' कविता में स्वीकारते हैं कि वे क्या नहीं कर पाये और क्यों नहीं कर पाये। उन्होंने कहा कि वे पहाडों, पर्वतों, तारों, नदियों, झरनों, प्रकृति की रंग-बिरंगी विविध छटाओं से नाता जोड़ पाये थे, लेकिन किसानों, जुलाहों, मछुवारों मेहनतकशों के ऐसे दूसरे तबकों तक नहीं पहुँच पाये जो सभ्यता को चला रहे हैं। यह उन्होंने काव्यात्मक रूप से ऐसे व्यक्त किया है, 'सबसे दुर्गम जो लोग हैं अपने अन्तराल में ... उन अन्तरमय, अन्तर के गहरे कोनों में तब उनके अन्तर का परिचय है। पाने के लिए सर्वत्र प्रवेश द्वार, बाधा हो गई मेरी जीवनयात्रा की बाड़।... अति क्षुद्र अंश में उनके सम्मान के चिरनिर्वासन पर समाज के ऊंचे मंच पर बैठा हूँ संकीर्ण वातायन में...।' समझा जा सकता है कि उन्होंने कितने दु:ख और पश्चाताप के साथ अपनी विफलता की तरफ देखा था। अपनी विफलता का एक कारण उन्होंने सही पकड़ा था। वह था उनके परिवार की धनसम्पन्नता द्वारा रहन-सहन की जो रूपरेखा तैयार की गई उस 'रहन-सहन का बैरियर'। दूसरा कारण यह था कि सत्य की खोज में वैज्ञानिक दृष्टिकोण को न अपना पाने से उन्होंने मानव सभ्यता के अपरिवर्तनीय सत्य के तौर पर मान लिया कि मानसिक और शारीरिक श्रम का फर्क शाश्वत है। यह फर्क रहे बिना सभ्यता चल नहीं सकती। इसलिए उन्होंने कहा था कि 'अगर लोगों का एक तबका निचले तल पर रहे बिना दूसरा तबका ऊपरले तल पर नहीं रह सकता।.. ऊपरले तल पर रहे बिना जाहिराना तौर पर तय सीमा से परे कुछ देखा नहीं जा सकता। ... सभ्यता की सब सर्वश्रेष्ठ बौद्धिक फसलें फुर्सत में फली-फूली हैं... मैं सिर्फ यही सोचा करता था कि जो तबका सिर्फ परिस्थितिवश नहीं(आर्थिक हालात की वजह से नहीं), बल्कि शरीर और मन की वजह से निचले तल पर काम करने के लिए मजबूर है और उसी काम के लायक हैं, इनके लिए यथासम्भव शिक्षा, स्वास्थ्य, सुख-सुविधा की बेहतरी के लिए भरसक कोशिश करनी चाहिए।' इसका मायना है रवीन्द्रनाथ के अनुसार ये गरीब लोग शारीरिक और मानसिक तौर पर समाज के ऊपरी तबके की सेवा के लिए ही पैदा हुए हैं।

सच्चे मानवतावादी एक जगह आकर अटक गये

एक और जगह उन्होंने कहा है, ' अपनी सम्पत्ति से लगाव तर्क का विषय नहीं है। यह मानव स्वभाव है। हम अपने आपको अभिव्यक्त करना चाहते हैं; आत्म अभिव्यक्ति का यह एक तरीका है।... लेकिन एक आम आदमी के लिए निजी सम्पत्ति उसकी व्यक्तिकता की भाषा है। व्यक्ति की अगर सम्पत्ति न रहे तो वह मानो गूंगा हो जाएगा... निजी सम्पत्ति रहेगी, लेकिन उसके अतिशय भोग की स्वतंत्रता को सीमाबद्ध कर दिया जाएगा। उस सीमा के परे जो फालतू हो वह सर्वसाधारण की भलाई के लिए होना चाहिए।... संक्षेप में, कुछ उसका अपना होना चाहिए और बाकी दूसरों के लिए होना चाहिए। एक सही समाधान अपने और पराये, दोनों को मान्यता देने से सम्भव है। जब दोनों में से किसी एक को भुला दिया जाता है तो मानव स्वभाव के निम्न के साथ द्वन्द्व उत्पन्न हो जाता है।' इस तरह आप देखते हैं कि रवीन्द्रनाथ के विचार से सभ्यता की जरूरत से ही मानसिक और शारीरिक श्रम के फर्क के चलते समाज में वर्ग-विभाजन है और बना रहेगा और लोगों का एक तबका 'शरीर और मन की वजह से निचले तल पर काम करने के लिए मजबूर है और उसी काम के लायक है।' और ''व्यक्ति की व्यक्तिकता की भाषा'' या ''आत्म अभिव्यक्ति के तरीके'' के हिसाब से ''व्यक्ति के हाथ में निजी सम्पत्ति रहेगी''। उस व्यक्ति की खुद की जो जरूरत है उतना रखकर बाकी वह दूसरों को बांट देगा। फूयरबाख से लेकर गाँधीजी तक सभी बुर्जुआ मानवतावादी का विचार यही था। लेकिन किस बात ने रवीन्द्रनाथ को भी यह विचार सांझा करने के लिए प्रवृत्त किया? इसका जवाब कॉमरेड शिवदास घोष ने दिया है। उन्होंने दिखाया है, ''मन की स्वतंत्रता की भी अपनी सीमाएं हैं। ये सीमाएं दो तरफ से पैदा होती हैं। एक है ठोस परिवेश और दूसरा है चिन्तन पद्धति। यानी वह प्रक्रिया जिससे जाने-अनजाने किसी आदमी का सोचने का ढंग विकसित हुआ है। यह प्रक्रिया उस व्यक्ति के मन या सोच की स्वतंत्रता को सीमाबद्ध कर देती है।''

छात्रों के जनवादी अधिकार हनन की साजिश जारी है

इसलिए रवीन्द्रनाथ के सिर्फ जीवनयापन की बाड़ ने ही नहीं, बल्कि उनके दृष्टिकोण ने भी रास्ते में अड़चन डाली थी। वे इस बात को समझ नहीं पाये। लेकिन यह बात सही है कि वे अपनी विफलता की कसक से छटपटाये थे और जिस हद तक वे अपनी विफलता समझ पाये थे, उन्होंने उसे खुलेआम जाहिर किया था। यहीं उनकी महानता है। रवीन्द्रनाथ की बड़ाई में जो बहुत ज्यादा भावुक हो जाते हैं, क्या वे इससे कोई सबक लेंगे? फिर बुर्जुआ वर्ग और सरकारी सरपरस्ती में पले बुद्धिजीवियों का एक हिस्सा है जो गोलमोल शब्दों में बहुत कुछ उपदेश झाड़ते रहते हैं। जैसे हाल ही में उन्होंने एक अभियान छेड़ किया है कि छात्रों को राजनीति नहीं करनी चाहिए और कॉलेज चुनावों को बैन कर देना चाहिए। जो इस अभियान की अगुआई कर रहे हैं वे बड़े ही ज्ञानी हैं। मैं कुछ व्यक्तियों के बारे में बात रखूंगा और यह विचार करने का जिम्मा आप पर छोड़ता हूँ कि ये ज्ञानवान व्यक्ति थे कि नहीं। हेमचन्द्र घोष ब्रिटिश शासनकाल में एक क्रान्तिकारी संगठन बेंगाल वालण्टियर्स के सर्वोच्च नेता थे। जब वे 8वीं कक्षा के छात्र थे तो सन्यासी बनने के लिए एक साधू के पास गये थे। साधू ने कहा, 'यह कैसी बात है आप सन्यास लेना चाहते हैं जबकि आपकी मातृभूमि गुलामी की जंजीरों में जकड़ी हुई है? जाओ देश के लिए काम करो।' जानते हो ये साधू कौन थे? ये विवेकानन्द थे। 8वीं कक्षा के इस छात्र को विवेकानन्द ने देश के लिए काम करने की सलाह दी थी। क्या ये बुद्धिजीवी जो छात्रों को राजनीति से दूर रखने पर आमादा हैं, क्या विवेकानन्द को कठघरे में खड़ा करने का मादा रखते हैं? सुभाष बोस जब 8वीं कक्षा के छात्र थे, उन्होंने कटक के रेवेन्शा कॉलेज में शहीद खुदीराम बोस दिवस मनाया था। उनके टीचर बेणी माधव दास ने उनको प्रेरित किया था। क्या उपरोक्त बुद्धिजीवी सुभाष बोस और बेणीमाधव दास पर मुकदमा करने का साहस करेंगे? चट्टगाँव में सूर्यसेन के नेतृत्व में जो जलालाबाद में ब्रिटिश फौज से बहादुरी से लड़े थे उनमें से ज्यादातर ही कमसिन उम्र के थे। कूमिल्ला जिले की 9वीं कक्षा की दो छात्राओं शान्ति-सुनीति ने तत्कालीन अत्याचारी ब्रिटिश पुलिस सुपर को गोली से उड़ा दिया था। ब्रिटिश हुक्मरानों की नजरों में वे अपराधी थी। क्या आज के बुद्धिजीवी भी उन्हें अपराधी मानेंगे? देशबंधु ने पुरजोर

(शेष पृष्ठ 6 पर)

कॉ. प्रभाष घोष का भाषण

(पृष्ठ 5 का शेष)

आह्वान किया था, 'एज्युकेशन कैन वेट, बट स्ट्रगल फॉर स्वराज कैन नोट'। 'छात्रानाम् अध्ययनम् तपः' इस झूठे वचन की दुहाई देकर जब छात्रों को राजनीति से दूर रखने की कोशिश की गई तो सुभाष बोस ने यह कहते हुए जोरदार प्रतिवाद किया था कि 'एकैडमिक अध्ययन छात्रों की तपस्या कभी नहीं हो सकती। उन्हें राजनीति में शामिल होना चाहिए' असल में उन्होंने छात्रों को राजनीति में आने के लिए प्रेरित किया। शरतबाबू ने साफ तौर पर यही कहा था, 'देश का काम करने में उम्र कभी किसी के लिए बाधा नहीं बन सकती, आप जैसे स्कूली छात्रों के लिए भी नहीं।' रवीन्द्रनाथ ने कहा, अन्याय जो करे और अन्याय जो सहे, तुम्हारी घृणा उन दोनों को ही तिनके की तरह दहे।' रवीन्द्रनाथ ने क्या यह कहा था कि पोस्ट ग्रेज्युएट डिग्री लेने के बाद ही इस सच्चाई को समझना? क्या आज हमारे देश में कुछ नहीं हो रहा, कोई अन्याय नहीं है, शोषण नहीं है, अत्याचार नहीं है, जिनके खिलाफ प्रतिवाद किया जाए? खुदीराम, भगत सिंह किस उम्र में राजनीति में आये थे? शासक पार्टियों के ये गुण्डे ही हैं जो चुनाव में अफरातफरी और हिंसा पैदा कर रहे हैं। यह काम 1972 में कांग्रेस ने किया, फिर सीपीआई(एम) ने किया, अब तृणमूल कर रही है। बड़ी विचित्र बात है जो हिंसा में लिप्त हो रहे हैं, वे ही कॉलेज चुनाव को बंद करने का नारा दे रहे हैं। दे आर क्रिमिनल्स। वे नहीं चाहते कि छात्र आन्दोलनों में शिरकत करें और स्वस्थ राजनीति अपनायें। अगर टकरावों व हिंसा की वजह से चुनावों को प्रतिबंधित करने की बात है तो क्यों नहीं तमाम दूसरे चुनाव भी प्रतिबंधित किये जाएं? क्या पंचायत, असैम्बली, पार्लियामेन्ट चुनावों में हिंसा और झड़पें नहीं होती हैं? इन सब चुनावों पर भी प्रतिबंध की गाज क्यों न गिरने दी जाए। लेकिन ऐसा नहीं होगा क्योंकि उस अवस्था में इन नेताओं का रोजगार छिन जाएगा! यह याद रखने की जरूरत है कि 1970-71में सीपीआई(एम) ने छात्र यूनियनों को हड़पना शुरू किया था, किसी स्वस्थ राजनीतिं, वैचारिक बहस और तर्क से समझाने के आधार पर नहीं, बल्कि महज बाहुबल से किया था। यही रास्ता 1972 में सत्ता हथियाने के बाद कांग्रेस द्वारा अपनाया गया। इसके बाद 1977 से लगातार 34 साल तक सीपीआई(एम) ने इसे जारी रखा। अब इस मामले में अपने पूर्ववर्तियों से स्पर्धा करने की बारी तृणमूल की आई है। इसके लिए क्या छात्र जिम्मेदार हैं? क्या राजनीति अपने आप में जिम्मेदार है? इसकी पूरी जिम्मेदारी शासक पार्टियों पर आयद होती है जो कॉलेज और यूनिवर्सिटियों पर येन-के प्रकारेण अपना पूर्ण नियंत्रण रखने के लिए ऐसे फासिस्ट हमलों को अंजाम देती रही हैं। उनके खिलाफ आवाज बुलन्द करने की जरूरत है। संघर्षों से अर्जित छात्रों के जनवादी अधिकार को तब क्यों छिनने दिया जाए?

मैं आपको एक घटना की याद दिलाना चाहता हूँ। यह आप सब जानते हैं कि राज्य में सत्ता में आने के तुरंत बाद सीपीआई(एम) सरकार ने केन्द्र के फरमान पर प्राइमरी स्तर से अंग्रेजी हटा दी थी। इसके खिलाफ हमारी पार्टी ने 18 साल आन्दोलन चला कर प्राइमरी से अंग्रेजी वापिस फिर लगवा दी थी। इस आन्दोलन की मूल शक्ति कौन थे? स्कूल-कॉलेजों के छात्र ही इसकी मूल शक्ति थे। इन छात्रों की सभा में सीपीआई(एम) के प्रलोभन और लाल आँखें तरेरने की परवाह न करते हुए डॉ. सुकुमार सेन, डॉ. नीहार रंजन राय, डॉ. प्रतुल गुप्त, डॉ. सुशील कुमार मुखर्जी, प्रमेन्द्र मित्रा, संतोष घोष जैसे कई जाने-माने शिक्षाविदों और साहित्यिक बुद्धिजीवियों ने अनेक सभाओं को सम्बोधित किया था। यहाँ तक कि साहित्यकार प्रमथनाथ बिशी की सलाह पर दस हजार प्राइमरी छात्रों का धरना तक कलकत्ता में किया गया था। उन ख्यातिप्राप्त हस्तियों और बुद्धिजीवियों के बारे में आज के ये बुद्धिजीवी क्या कहेंगे? दरअसल, यह छात्रों को राजनीति से दूर रखने की गहरी साजिश है।

गद्दी हथियाना ही बीजेपी का एकमात्र धर्म है

कॉमरेड्स, विद्यासागर, विवेकानन्द जैसे महापुरुषों ने हमारे देश में आज का सर्वग्रासी संकट नहीं देखा था। आज नीति-नैतिकता के क्षेत्र के भयंकर संकट देख कर हमें काफी दुःख होता है। एक बहु प्रचलित बंगाली दैनिक समाचार पत्र ने लिखा है कि एक नरेन्द्र(विवेकानन्द) दुनिया को रास्ता दिखाने के लिए श्रद्धेय हैं और दूसरे नरेन्द्र(मोदी) हिन्दुस्तान का मार्गदर्शन करने के लिए प्रशंसनीय हैं। जरा सोच कर देखिये कि किसके साथ किसकी तुलना हो रही है! देश एक ऐसी दयनीय दशा में है कि एक भी बुद्धिजीवी ने ऐसे एक शैतानीभरी टिप्पणी का प्रतिवाद नहीं किया। विवेकानन्द के दर्शन के साथ हमारा बुनियादी मतभेद होते हुए भी हम उनकी बहुत श्रद्धा करते हैं। हम मार्क्सवादी हैं, वे अद्वैत वेदांतवादी थे। समय का अभाव होने से आज की इस सभा में इस पर चर्चा का मौका नहीं है वरना मैं दिखा देता कि कैसे अनेक महान मानवप्रेमियों, गरीब हितैषियों की तमाम शुभकामनाएं अद्वैत वेदांत की वाणी की वेदी के नीचे आत्मसमर्पण कर पथभ्रष्ट हो गई हैं। लेकिन दिखाना चाहता हूँ कि आरएसएस और नरेन्द्र मोदी की पार्टी भाजपा दोनों ही किस तरह विवेकानन्द चिन्तन की घोर विरोधी हैं। विवेकानन्द ने कहा था, 'तुम अगर भक्त होना चाहते हो तो वह जानना जरूरी नहीं है कि भगवान कृष्ण ने मथुरा में जन्म लिया था या ब्रजधाम में, या उन्होंने ठीक किस दिन गीता का उपदेश दिया था।' यूं कहे कि उन्होंने भगवान कृष्ण और अन्य अवतारों के जन्म स्थानों को जानने कि जरूरत को सिरे से खारिज कर दिया था। जबकि दूसरी तरफ आरएसएस, बीजेपी ने राम का जन्मस्थान खोज निकालने के नाम पर देश भर में साम्प्रदायिक दंगे करवाये। चैतन्य, रामकृष्ण, विवेकानन्द या हिन्दू धर्म के अन्य ज्ञात महान प्रचारकों ने क्या कभी बाबरी मस्जिद ढहाने और वहाँ राम मन्दिर बनाने की सलाह दी थी? क्या वे हिन्दू नहीं थे? बाबरी मस्जिद जैसे एक ऐतिहासिक स्मारक को तोड़ना तो तालिबानों द्वारा बामियान में ऐतिहासिक बुद्ध प्रतिमा तोड़े जाने के समतुल्य है। आज अगर विवेकानन्द जिन्दा होते तो क्या इसका समर्थन करते या इसका डट कर विरोध करते? विवेकानन्द का मानना था कि उनके लिए जैसे भगवान कृष्ण थे, वैसे ही पैगम्बर मुहम्मद थे। देश में मुसलमानों की बढ़ती संख्या पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए विवेकानन्द ने कहा था कि ब्राह्मणों और जमींदारों के जुल्मो-सितम बर्दाश्त न कर पाने के चलत गरीब और निचले तबके के हिन्दुओं ने इसलाम धर्म अपना लिया। विवेकानन्द ने कहा था,'मेरा अगर कोई बेटा होता तो मन की एकाग्रता की आदत और साथ-साथ एक पैरा की प्रार्थना और मंत्रपाठ के सिवा और किसी तरह के धामिक शिक्षा मैं उसे नहीं देता। उसके बाद उम्र बढ़ने के साथ विभिन्न मत और उपदेश सुनते-सुनते वह ऐसे कुछ से वाकिफ हो जो उसके लिए सत्य हो। इसलिए यह बहुत ही स्वाभाविक है एक ही साथ पूर्ण स्वाधीन रूप से और निर्विरोध रूप से मेरा बेटा बौद्ध, मेरी पत्नी ईसाई और मैं खुद मुसलमान हो सकता हूँ।' ये हैं विवेकानन्द। आज अगर विवेकानन्द जिन्दा रहते तो क्या नरेन्द्र मोदी और उन जैसों की अच्छी धुनाई नहीं कर देते? विवेकानन्द की एक और उक्ति सुनने पर आप दंग रह जाएंगे। इस मन्दिर, देवता और पूजापाठ के तामझाम पर हो रही अति को धिक्कारते हुए उन्होंने कहा था, 'काशी और वृन्दावन के मन्दिर और ठाकुरद्वारे खोलने पर करोड़ों रुपये खर्च किये जा रहे हैं।... दूसरी तरफ जिन्दा भगवान अन्न बिना, शिक्षा बिना मरते जा रहे हैं।' अब सोचिये, बीजेपी नेताओं ने जिस तरह यज्ञ-हवन किये और धर्मपरायण हिन्दुओं से पूरे देश भर से लाखों लाख ईंटें इकट्ठी की, इसे देख कर विवेकानन्द क्या कहते? हालाँकि भारी संख्या में जमा की गई वे ईंटें कहाँ गई यह कोई नहीं जानता। सुनियोजित कत्लेआम के शिकार हुए हजारों बेगुनाहों के खून से इस नरेन्द्र मोदी के हाथ रंगे हैं। यह दावा किया जाता है कि इस नरेन्द्र मोदी का राज्य गुजरात विकास की बुलन्दियों पर है। यह तारीफ कौन कर रहे हैं? बड़े-बड़े एकाधिकारी पूँजीपतियों को छोड़ कर और कोई नहीं। इसके विपरीत गरीब वहाँ कंगाल और तबाह हो रहे हैं। वहाँ रोजगार नहीं है, शिक्षा नहीं है, चिकित्सा नहीं है, यहाँ तक कि पीने का पानी भी मुहैया नहीं है। कांग्रेस के भी हाथ सिख-विरोधी दंगों में खून से रंगे हैं। ये वोट के सिवा और कुछ नहीं समझते हैं। हिन्दुत्व का नारा केवल चुनावी लाभ बटोरने के लिए ही है। सीपीआई(एम)ने कहा बताते हैं कि अगर बीजेपी हिन्दुत्व फैलाना छोड़ दे तो सीपीआई(एम) के लिए बड़ा फायदेमंद होगा। यह बात सही है कि इससे सीपीआई(एम) को फायदा होगा क्योंकि यह किसी को नहीं पता कि चुनावी हवा का रुख आखिर किस तरफ रहेगा। सीपीआई(एम) अब कांग्रेस के साथ अन्दरखाने समझौता करके चल रही है, कल अगर चुनावी फायदे के लिए जरूरत पड़ी तो यह आरएसएस और बीजेपी से हाथ मिला सकती है जैसे इसने 1977 में मिलाया था। ''जनहित'' में ये पार्टियाँ कुछ भी कर सकती हैं। मैं कहता हूँ कि कल को अगर कोई बीजेपी से कहे कि नरेन्द्र मोदी मुसलमान बन जाए तो प्रधान मंत्री की कुर्सी मिलने की गारण्टी देता हूँ, तो ऐसे में उन्हें मुसलमान बनने में कोई गुरेज नहीं होगा। गद्दीनसीन होना ही है उनका असली धर्म। सत्ता की राजनीति न हिन्दू देखती है न मुसलमान। एक और पहलू गौरतलब है। पहले भारत में सनातन हिन्दू समाज ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र-चार परतों में बंटा हुआ था। अब तो हमारे भारतीय लोकतंत्र ने इन सामाजिक स्तर-विन्यास को आठ-दस परतों में बांट दिया है। क्षत्रियों और शुद्रों को आगे और भी कई परतों में उपविभाजित करने की योजना चल रही है। मुसलमानों में भी इसी तरह के विभाजन किये जा रहे हैं। वोट बैंक तैयार करने के लिए ऐसी तमाम कवायदें की जा रही हैं। एक नये स्तर-विभाजन की घोषणा हुई नहीं कि अगले ही दिन उसके पलट एक और स्तर-विभाजन प्रकट हो जाता है।

मैं इस प्रसंग में एक बात और कहना चाहता हूँ, अल्पसंख्यक समुदाय, तथाकथित निम्नवर्ण और दलितों की असहनीय दरिद्रता का फायदा उठा कर ये वोटसर्वस्व ये पाखण्डी 'रिजरवेशन' के नाम पर निहायत धोखेबाजी की गतिविधियाँ चला रहे हैं। भारत के संविधान में शुरूआत से ही दलितों के लिए आरक्षण का प्रावधान है। उसके बावजूद 6 दशकों के लम्बे अर्से के बाद भी क्या यह दावा किया जा सकता है कि पिछड़ी हुई जनजातीय आबादी की पर्याप्त तरक्की हुई है, कंगाली, भुखमरी, इलाज के अभाव में होने वाली मौत, घर से बेदखली, बेरोजगारी-आदि व्याधियों से अब वे और त्रस्त नहीं हैं? बल्कि तसवीर इसके उलट है। इसी तरह, तथाकथित निम्नजातियों के लोगों और अल्पसंख्यकों के विकास का क्या जरा सा भी आभास मिलता है? उनमें सिर्फ क्रीमी लेयर तबके का आविर्भाव हुआ है जो तमाम सुविधाएं भोग रहा है। लेकिन इन पिछड़े तबको के नेता इसीं को लेकर खुश हो रहे हैं और समस्या की तह में जाने की परवाह किये बिना इस या उस पार्टी को वोट देने की कह रहे हैं। जब तक पूँजीवाद रहेगा, तब तक यह घोर गरीबी, निर्मम धोखाधड़ी, आर्थिक गैरबराबरी, जाति-धर्म-नस्लगत भेदभाव रहेगा। इसलिए फूटपरस्त, संकीर्ण मानसिकता से मुक्त हो कर पूँजीवाद के खिलाफ तमाम शोषित-पीड़ित जनता के सशक्त संयुक्त संघर्ष की जरूरत है।

धर्म आज नहीं दिखाता शोषित-पीड़ित जनता के कल्याण का पथ

धार्मिक नेताओं के बारे में भी मुझे कुछ कहना है। मार्क्सवाद-लेनिनवाद-शिवदास घोष चिंतन का छात्र होने के नाते इससे पहले हमने कहा है कि हम सभी धर्मों और अतीत के धर्मप्रचारकों का आदर करते हैं। हम जानते हैं कि दास व्यवस्था के युग में धार्मिक चिन्तन का जन्म हुआ था और इसने सामाजिक प्रगति व समाज कल्याण का सन्देश दिया था। ईसायत और इसलाम दोनों दासप्रथा के खिलाफ लड़े थे। मार्क्स-एंगेल्स और कॉमरेड शिवदास घोष की रचनाओं में आप इसका उल्लेख पायेंगे। उन्होंने यह भी दिखाया है कि उस युग की ऐतिहासिक सीमाबद्धताओं के कारण धर्म अंततः शासक वर्ग के हाथों में उनके वर्ग शोषण-दमन चलाने का हथियार बन गया था। आज भी मामला वैसा ही है। लेकिन इसके दो पहलूं हैं। पहला है, क्या आज हमारे जीवन को त्रस्त कर रही किसी भी समस्या की चर्चा किसी भी धर्मग्रंथ में है? क्या किसी भी धर्म ने रोशनी डाली है कि महंगाई, छंटनी, बेरोजगारी, जनवादी अधिकारों में कटौती, पूंजीवाद-साम्राज्यवाद की समस्याएं क्यों हैं, समाजवाद की जरूरत क्यों है, कौन सी पार्टी सही है और कौन सी गलत, उपनिवेशवाद, बाजार संकट, साम्राज्यवादी युद्ध और आधुनिक युग की ऐसी अन्य समस्याएं क्यों हैं? क्या उनके द्वारा ऐसा करना सम्भव है? केवल उसी युग की समस्याओं को लेकर विस्तार से चर्चा है। दूसरा है, क्या कोई भी धर्म आज उन निर्देशों को मान कर चल रहा है जो अन्याय-अत्याचार के खिलाफ लड़ने और सत्य को स्थापित करने के लिए विभिन्न पवित्र धर्मग्रंथों में दिये गये हैं। आज जो अवर्णनीय दरिद्रता व्याप्त है, व्यापक पैमाने पर महिलाओं और बच्चियों से बलात्कार हो रहे हैं, विवेकानन्द अगर जिन्दा होते तो क्या करते? क्या वे यह सलाह देते कि एकांत मठ में जाकर ध्यान लगाओ? या इनके निवारण की माँग करते हुए वे खुद सड़कों पर उतर पड़ते। लेकिन क्या धार्मिक संस्थाओं और स्वयंभू बाबाओं में से किसी ने इसके प्रतिवाद में अपनी आवाज बुलन्द की? इसके उलट आरएसएस ने महिलाओं को घरों में ही रहने और लक्ष्मण रेखा पार न करने की सलाह दी थी। क्योंकि रावण के आधुनिक अवतार घात लगाए बैठे हैं। यही है आज हिन्दू धर्म का फरमान। इसलाम के मुताबिक शराबखोरी और व्यभिचार घोर पाप हैं और सख्त सजा देने लायक हैं। इसके बावजूद क्या मुस्लिम अल्पसंख्यकों में ऐसी करतूतों की भरमार नहीं है? क्या इसलाम धर्म के मुल्ला-मौलवी इसके खिलाफ अपना मुँह खोल रहे हैं या प्रतिवादी आन्दोलन खड़े कर रहे हैं? बहरहाल, इतने भव्य मन्दिर-मस्जिद बनवाने के लिए अमीर अनुयायियों द्वारा खर्च किया जाने वाला इतने बड़ी मात्रा में धन कहाँ से आता है? क्या पण्डित-पादरी-मौलवी यह जानने की जहमत उठाते हैं कितने गरीब जनता के खून का आखिरी कतरा निचोड़ कर चंद अमीरों के पास धन का यह अम्बार लगता है? किस तरह अमेरिकी साम्राज्यवाद ने सऊदी अरब को इस्तेमाल करके इराक में गाँव-शहरों, मस्जिदों, हस्पतालों, शिक्षण संस्थानों, कृषि और उद्योग को तबाह किया था, अंधाधुंध लाखों नागरिकों को मौत के घाट उतार दिया था जिनमें से ज्यादातर इसलाम मानने वाल थे। लेकिन क्या पवित्र मक्का के मौलवियों ने इसका प्रतिवाद किया? हजरत मुहम्मद जिन्दा होते तो क्या ऐसा होने देते? क्या वे यह सलाह देते कि इन सब झमेलों में मत पड़ो और मस्जिद में नमाज अदा करो? या यह कहते कि नमाज को रहने दो, दुश्मन के खिलाफ तलवार उठाओ। इसलाम के नाम पर तालिबान द्वारा जो बर्बरतो की जा रही है, क्या वे इसके खिलाफ

(शेष पृष्ठ 7 पर)

कॉ. प्रभाष घोष का भाषण

(पृष्ठ 6 का शेष)

डट कर खड़े नहीं हो जाते? लेकिन आज धर्म में वह शक्ति कहाँ है? इतिहास के नियम से सभी धर्मों की यही त्रासदीपूर्ण परिणति हुई है। मेरी इस बात से अगर किसी धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँचे तो मुझे माफ करना। लेकिन ऐसा मार्क्सवादी अॅथोरिटियों ने हमें सिखाया है और हमारा दृढ़विश्वास भी है कि उस युग में धार्मिक महापुरुष जिस तरह तत्कालीन अन्याय-अत्याचार के खिलाफ लड़े हैं, हम उनकी शिक्षा लेकर और बाद के समय में नवजागरण और जनवादी क्रान्तिकारियों से प्रेरणा लेकर आज के युग में शोषण-जुल्म के खिलाफ लड़ रहे हैं नये युग के नये आदर्श मार्क्सवाद के रास्ते पर। आज के धर्मप्रचारक नहीं, बल्कि हम मार्क्सवाद- लेनिनवाद-शिवदास घोष की चिन्तनधारा के छात्र ही हर युग के महापुरुषों की संग्रामी परम्परा को वहन कर रहे हैं।

इन जघन्य कृत्यों से पूँजीवाद का दिवालियापन साफ उजागर हो रहा है। पूरी पूँजीवादी दुनिया गहन संकट में फंसी हुई है। अमेरिकी अर्थव्यवस्था डूब रही है। 'ओकूपाई वाल स्ट्रीट' आन्दोलन लगातार 7 महीने चला। विशाल आन्दोलनों और हड़तालों के चलते यूरोप में उथल-पुथल मची हुई है। शुक्र है कि यूरोप में ऐसा कोई भी बुद्धिमान पत्रकार नहीं है जो लिखे कि कार्यदिवस की हानि करने वाली हड़तालें हो रही हैं। ऐसा होने पर यूरोप में उसे पीट-पीट कर उसका हुलिया बिगाड़ देते।

पूँजीवाद सड़-गल गया है, समाजवाद कायम करने के लिए आगे आयें

गौरतलब है कि पूँजीवाद पुराना पड़ गया है, गया गुजरा हो गया है, सड़-गल गया है। जब सामन्तवाद पतनशील और मरणासन्न हो गया था तब पूँजीवाद एक प्रगतिशील शक्ति के रूप में उभर कर आया था। आज पूँजीवाद चौतरफा रिसते हुए घावों को लेकर अपनी मृत्युवेदना से छटपटा रहा है। इसलिए हमें समाजवाद चाहिए। मार्क्सवाद का वैज्ञानिक दर्शन चाहिए। मार्क्सवाद के आधार पर ही सोवियत यूनियन ने नई सभ्यता दी थी। उस समय रोमाँ रोलाँ, बर्नाड शा, आइन्स्टीन, रवीन्द्रनाथ, सुभाष बोस, शरतचन्द्र, प्रेमचन्द आदि महापुरुष सोवियत समाजवाद को देखकर बहुत मुग्ध हुए थे, प्रेरित हुए थे। साम्राज्यवादियों के साथ मिलकर प्रतिक्रान्तिकारियों ने उस सोवियत समाजवाद को ध्वस्त कर दिया । इस विध्वंस से सबक लेकर समाजवाद की पुनर्स्थापना के लिए नये सिरे से प्रयास किये जाने चाहिएं। इसके सिवा मुक्ति का दूसरा और कोई रास्ता नहीं है। याद रखें, कॉमरेड शिवदास घोष की इस अमूल्य शिक्षा को ध्यान में रखें कि आज मार्क्सवाद और वैज्ञानिक समाजवाद का विरोध करके कोई प्रगतिशील आन्दोलन नहीं किया जा सकता, समाज की प्रगति नहीं लायी जा सकती।

आज भारत में तीन-चार राज्यों को छोड़ कर बाकी सभी में 24 अप्रैल का यह ऐतिहासिक दिन यथोचित ढंग से मनाया जा रहा है। हजारों की संख्या में लोग इन कार्यक्रमों में शामिल हुए हैं। आप इस विशाल जनसभा के खुद गवाह हैं। क्या आप जानते हैं कि यह पार्टी किस तरह शुरू हुई थी? आजादी आन्दोलन की क्रान्तिकारी धारा के एक सेनानी ने मार्क्सवाद से प्रेरित होकर अपने सिर्फ 6 क्रान्तिकारी सहयोद्धाओं को लेकर एक दिन इस पार्टी के निर्माण का संघर्ष शुरू किया था। लोग नहीं थे, धन नहीं था, प्रचार नही था, रहने-खाने का कोई ठिकाना नहीं था। सिर्फ था दृढ़ संकल्प और दृढ़ विश्वास। उन्होंने देखा कि इस देश में सही कम्युनिस्ट पार्टी नहीं होने से इतने बड़े नवजागरण के आन्दोलन, शानदार आजादी आन्दोलन-सब को ही इस्तेमाल करके समझौते के जरिये भारतीय राष्ट्रीय बुर्जुआ वर्ग का सत्ता पर कबिज होना तय है। क्योंकि जो सीपीआई (वर्तमान में सीपीआई (एम), सीपीआई, नक्सली ग्रुपों में विभाजित) पार्टी थी वह कभी सही कम्युनिस्ट पार्टी नहीं बन पायी और उसने कभी सही मार्क्सवादी रास्ते का अनुसरण नहीं किया। फलस्वरूप दूसरे अन्तर्राष्ट्रीय से जुड़ी सोशल डैमोक्रेटिक पार्टियों और रूस की मेनसेविक पार्टी की तरह ही अविभाजित सीपीआई भी मजदूर वर्गीय पार्टी की नहीं, बल्कि पेटी-बुर्जुआ वर्ग की पार्टी बन कर रह गई। एक तरफ इस देश के सभी महापुरुषों और दूसरी तरफ महान मार्क्स-एंगेल्स-लेनिन- स्टालिन- माओ त्से तुंग के जीवन-संघर्ष से उपयुक्त शिक्षा लेकर कॉमरेड शिवदास घोष एक कठिन कठोर सर्वव्यापी ऐतिहासिक संघर्ष के जरिये सर्वहारा के एक महान नेता के रूप में उभरे थे। उन्होंने मार्क्सवाद को युगोपयोगी, विकसित, समृद्ध और उन्नत किया। इस प्रक्रिया में मार्क्सवादी विज्ञान की रोशनी में ज्ञान-विज्ञान-दर्शन-राजनीति-संस्कृति हर क्षेत्र में वे अपना सृजनशील योगदान दे गये है। उन्हीं महान मार्क्सवादी चिन्तनकार कॉमरेड शिवदास घोष के एक अन्यतम छात्र के तौर पर आज आपके सामने मैंने कुछ बातें रखी। आशा करता हूँ कि आप सोच-विचार करके देखेंगे।

एसयूसीआई(सी) को मजबूत करें

आप बार-बार ठगे गये हैं, जब तक आप खुद राजनीति की साधना नहीं करेंगे तब दोबारा फिर ठगे जाएंगे। शासक बुर्जुआ वर्ग और उसकी ताबेदार पार्टियाँ चाहती है कि आप राजनीति से विमुख रहें, अनभिज्ञ रहे बेवकूफ बने रहें ताकि वे जिस ओर उनकी मर्जी हो उस ओर आपको धकेल सकें। कभी कांग्रेस, कभी बीजेपी, कभी सीपीआई(एम), कभी तृणमूल-चुनावी राजनीति की इसी अंधी गली में आपको घुमाते रहेंगे। अखबार, मीडिया को ये ही कन्ट्रोल करते हैं और उन्हीं खबरों को पढ़ कर आप प्रभावित हो जाते हो। क्या आपने कभी सोच कर देखा है कि इन अखबारों में, टीवी पर हमारी खबर क्यों नहीं दी जाती? आज की इस विशाल जनसभा की नजर में पड़ने लायक कवरेज भी क्या देखने को मिलेगी? लेकिन हर कोई यह मानने को मजबूर है कि पश्चिम बंगाल में कांग्रेस, तृणमूल और सीपीआई(एम) के बाद ही हमारी दलीय शक्ति है। हमारी पार्टी जैसी अनुशासित, समर्पित कार्यकर्ता वाहिनी और किस पार्टी के पास है? इसी से वे भयभीत हैं। प्रचार के बिना भी यह पार्टी जब इतनी तेजी से बढ़ती जा रही है, वह भी एक क्रान्तिकारी के रूप में, हम इन सभी के लिए गंभीर खतरे की घंटी हैं। इसलिए मैं अपनी बात को दोहरा रहा हूँ कि कृपया अंधें की तरह इस या उस पार्टी के पीछे मत भागिये, या इस गलतफहमी का शिकार मत बनिए कि किसी पार्टी की भीड़ खींचने की क्षमता उसकी राजनीति और नीतियों के सही होने की द्योतक है। ठण्डे दिमाग से तर्क-विचार की कसौटी पर प्रत्येक पार्टी, प्रत्येक ताकत को जाँच-परख लीजिए। अगर एक पार्टी सही आदर्श और सही नीति अपना कर नहीं चलती है तो क्या फर्क पड़ता है कि वह बहुत बड़ी भीड़ जुटा लेती है? उनके पीछे भीड़ की काफी रैलियाँ आपने देखी हैं। अगर आप मानते हैं कि हम सही रास्ते पर चल रहे हैं, तो तहेदिल से हमारा साथ दीजिए, अपने घरों के ईमानदार लड़के-लड़कियों को बाहर निकलने दीजिए और हमारे साथ शामिल होने दीजिए। हमेशा इस बारे में चौकस रहिए कि हमारी पार्टी के नेता और कार्यकर्ता कॉमरेड शिवदास घोष की शिक्षाओं के मुताबिक चल रहे हैं कि नहीं। आप हमारी बेझिझक आलोचना करिए अगर आपको लगे कि हमसे गलती हो रही है या हम भटक रहे हैं। इस पार्टी को केवल मजबूत करना ही नहीं, बल्कि इसकी रक्षा करना भी आपका फर्ज बनता है।

आप हर मौहल्ले, कारखानें, प्रतिष्ठान में जनकमेटी गठित कीजिए, किसी भी पार्टी का मुखापेक्षी न रह कर अपनी समस्याओं को लेकर खुद सोचे-विचारें और लड़ें। हम आपकी भरसक मदद करेंगे। ईमानदार साहसी युवक-युवतियों को लेकर ऐसे स्वयंसेवक दस्ते बनाइये, जो लूटरों, फिरौती वसूल करने वालों के खिलाफ डट कर खड़े हो जाएं, बुजुर्गों के सम्मान की रक्षा करें, महिलाओं को अत्याचार से बचाएं, वहीं जनवादी जनआन्दोलन के संचालन के दौरान पुलिस ज्यादतियों का मुकाबला भी करें।

आप जानते हैं कि क्रान्तिकारी पार्टी होने के नाते हम हमेशा ही जनता के सुसंगठित, सचेत जनवादी आन्दोलनों को बहुत महत्व देते हैं। इससे पहले पचास-साठ के दशक के कांग्रेस शासनकाल में हमने अकेले और संयुक्त रूप से कई शक्तिशाली वर्ग संघर्ष और जनआन्दोलन गठित किये थे। बाद में संयुक्त मोर्चा सरकार में रहते समय ही हमने सरकार-विरोधी आन्दोलन भी किये थे। 1977 में सीपीआई(एम) सरकार आने के बाद कुछ दिन कुछ लोगों का मोह रहने से हम तुरंत बड़े आन्दोलनों में नहीं उतरे। लेकिन 1979 की 15 जून को हमने ही सबसे पहले जनजीवन की नाना माँगों पर राजभवन के सामने विक्षोभ प्रदर्शन किया था। हमारे सैकड़ों कार्यकर्ता पुलिस कार्रवाई में गंभीर रूप से घायल हुए थे। हमने प्राइमरी से अंग्रेजी दोबारा चालू करने की माँग पर दीर्घस्थाई आन्दोलन चलाया था। इसके बाद और भी कई माँगों पर आन्दोलन गठित करते रहे। पश्चिम बंगाल में सीपीआई(एम) और उसकी पुलिस द्वारा किये गये हमले में हमारे कुछ नेताओं सहित डेढ़ सौ से ज्यादा कार्यकर्ताओं की हत्याएं की गई, और भी सैकड़ों कार्यकर्ता गंभीर रूप से घायल हुए, हजारों कार्यकर्ता झूठे मुकदमों में जेल में ठूंसे हुए हैं। तब कोई भी विपक्षी पार्टी आन्दोलन की राह पर नहीं देखी गई। इस बार भी जनआन्दोलन के हित में ही हमने सीपीआई(एम) की हार चाही थी। हमने चुनाव से पहले ही तृणमूल को बता दिया था कि उनके द्वारा सरकार बनाये जाने पर भी हम जनता की माँगों पर लड़ाई जारी रखेंगे। थोड़े से कुछ दिन हमने तृणमूल के बारे में पब्लिक का मोहभंग होने का इन्तजार किया। उसके बाद हमने ही सबसे पहले 8वीं कक्षा तक फेल-पास प्रणाली बहाल करने और अन्य माँगों पर तृणमूल सरकार की जनविरोधी नीतियों के खिलाफआन्दोलन किये। इसके अलावा राज्य स्तर पर और जिला-जिला में विभिन्न तबकों के लोगों की विभिन्न माँगों पर हम आन्दोलन करते जा रहे हैं। इन आन्दोलनों की खबर मीडिया नहीं देता है। आप केवल हमारी पार्टी के मुखपत्र गणदाबी में ही इनकी खबर पाते हैं। आने वाले दिनों में चिट फण्ड घोटाले के खिलाफ और अन्य ज्वलन्त मुद्दों पर हम जोरदार आन्दोलन गठित करेंगे। मैं आशा करता हूँ, आपका भरपूर सहयोग-समर्थन मिलेगा। सीपीआई(एम), तृणमूल सहित सभी पार्टियों के ईमानदार कार्यकर्ता-समर्थकों से पूरजोर अपील करता हूँ कि आप भी जनहित में इस आन्दोलन में शामिल हों।

बुंदाबादी शुरू हो गई है, इसलिए भाषण को लम्बा नहीं करना चाहता हूँ। अंत में हमारे महान नेता कॉमरेड शिवदास घोष की एक अपील आपको पढ़ कर सुनाऊंगा। 1974 में उन्होंने कहा था, ''याद रखें, जो शुरूआत में ही आदर्श या विचारधारा के लिए कुर्बानियाँ देने के लिए आगे आते हैं, वे बहुत नहीं, चंद लोग ही होते हैं – यौवन से भरपूर, तेजस्वी छात्र-नौजवान। हर देश में सामाजिक विकास के हर स्तर पर ये छात्र-नौजवान ही क्रान्तिकारी विचारधारा से प्रेरित और लैस होकर आगे आते हैं–जिन पर क्रान्तिकारी विचारधारा व आदर्श का प्रभाव रहता है। क्रान्तिकारी विचारधारा के प्रति समर्पित होकर ही वे जनता के बीच जाते हैं, हजारों हजार लोगों को जागरूक करते हैं, संगठित करते हैं। जनता की राजनैतिक शक्ति का निर्माण करने में सहायक होते हैं। तब एक दिन वक्त आता है जनता के द्वारा कार्रवाई करने का जिसे हम क्रान्ति कहते हैं। उससे पहले आपको लम्बा रास्ता पार करना पड़ता है– जो कठोर, कठिन, कष्टमय, लेकिन आनन्दमय रास्ता है। मैं कहता हूँ कि सबसे अधिक आनन्द और इज्जत का रास्ता है।... इस लड़ाई में आपको मौत को गले लगाना पड़ सकता है। लेकिन आप इज्जत के साथ सर ऊंचा करके मरेंगे। जिल्लत और ग्लानि लेकर कुत्ते-बिल्ली की तरह सड़क पर सड़ कर नहीं मरेंगे। याद रखें, हम सब मरणशील हैं, जब मरना ही है तो भीख माँगते हुए जलील होकर मत मरें। अगर मरना ही है तो इज्जत से मरना है। इस तरह इज्जत से जीने और मरने का एकमात्र रास्ता है–समाज के क्रान्तिकारी परिवर्तन के लिए जनता के क्रान्तिकारी आन्दोलनों में सक्रिय भाग लेना।'' यह है कॉमरेड शिवदास घोष की अपील। यह अपील आप दिल में संजो कर ले जाएं।

इन्कलाब जिन्दाबाद, एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) जिन्दाबाद
सर्वहारा के महान नेता कॉमरेड शिवदास घोष लाल सलाम

कॉमरेड सुरेन्द्र नाथ मौर्य नहीं रहे

कॉमरेड सुरेन्द्रनाथ मौर्या हमारे बीच नहीं रहे। उन्होंने 20 मई 2013 को सुबह 8 बजे कलकत्ता हार्ट क्लीनिक एण्ड हॉस्पिटल में अंन्तिम सांस ली। वे लम्बे अर्से से बीमार थे। वे मल्टीपल मिलोमा से ग्रसित थे। वे 1980 में पार्टी में शामिल हुए और एक अच्छे संगठक बन गए। वे एसयूसीआई (सी) जौनपुर जिला कमेटी के कार्यालय सचिव निर्वाचित हुए थे। वे एआईकेकेएमएस जौनपुर जिला कमेटी के सचिव निर्वाचित हुए थे। वे एसयूसीआई(सी) की यूपी राज्य सांगठनिक कमेटी के सदस्य थे। वे उत्तर प्रदेश भूमि अधिग्रहण-विरोधी मोर्चे के संयोजक थे। वे बहुत ही होनहार कॉमरेड थे। उन्होंने अपने अविवाहित जीवन को पार्टी के काम में लगा दिया था। उन्होंने अपने परिवार के सभी सदस्यों को पार्टी के साथ जोड़ा। जनजीवन से जुड़े मुद्दों को लेकर वे हमेशा ही आन्दोलन में कूद पड़ते थे। वे पार्टी के सर्वकालिक कार्यकर्ता थे जो बदलापुर (जौनपुर) पार्टी आफिस में रहते थे। उनके निधन की खबर सुन कर सभी पार्टी कॉमरेड, समर्थक और हमदर्द शोक में डूब गए। उनका असामयिक निधन पार्टी को बड़ी हानि है। वे 58 वर्ष के थे।

25 मई को एसबी डिग्री कॉलेज के सभागार में उनकी शोक सभा हुई। सभा में एसयूसीआई(सी) के राज्य सचिव कॉ. वीएन सिंह, एसबी डिग्री कॉलेज के पूर्व प्रिन्सीपल पारस नाथ सिंह, पार्टी के जिला सचिव कॉ. जगदीश चंद्र अस्थाना, राज्य कमेटी सदस्य कॉ. दिनेशकांत दुबे, कॉ. जगन्नाथ वर्मा, कॉ. बेचन अली, कॉ. पुष्पेन्द्र विश्वकर्मा व पार्टी व जन संगठनों के अनेक नेताओं ने कॉमरेड सुरेन्द्रनाथ मौर्य की तस्वीर पर फूल चढ़ा कर श्रद्धांजली दी।

कॉमरेड सुरेन्द्रनाथ मौर्य लाल सलाम!

R.N.I. No.- 43022/85
P.R.No.-DL(C)-01/1123/2012-2014
Posting at IPMBC on 7–8 and 22–23 Fortnightly, Date of Printing : 5June, 2013

वैज्ञानिक समाजवाद के जनक कार्ल मार्क्स जयंती समारोह

मुजफ्फरपुर (बिहार) : 5 मई को सर्वहारा के महान नेता तथा द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद व वैज्ञानिक समाजवाद के जनक कार्ल मार्क्स की जयंती पर एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) मुजफ्फरपुर जिला कमिटी के तत्वावधान में जिला कार्यालय सभागार में राज्य कमिटी के वरिष्ठ सदस्य कॉ. अरूण कुमार सिंह की अध्यक्षता में आयोजित कार्ल मार्क्स जयंती समारोह में कॉ. रंजीत धर ने कहा कि द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी दर्शन आज के युग का सर्वश्रेष्ठ दर्शन है। द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद व वैज्ञानिक समाजवाद के दर्शन के क्रमवार इतिहास की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि मानव सभ्यता के विकास का इतिहास दरअसल वर्ग संघर्ष का इतिहास है। यह इतिहास दर्शाता है कि समाज अपने विकासक्रम में पूंजीवाद को उखाड़ फेंककर शोषणविहीन वर्गहीन समाज साम्यवाद में जायेगा, जहां मानव द्वारा मानव का शोषण नहीं रहेगा। कॉ. धर ने आगे कहा कि जो उत्पादन करता है, वह भूखो मर रहा है। जनवादी मूल्यों पर हमले बढ़ रहे हैं। समाज से तमाम मानवीय नाते–रिश्ते खत्म हो रहे हैं, इंसानियत खत्म हो रही है, महिलाओं पर हमले व जुल्म में तेजी से बढ़ोतरी जारी है। एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) के पोलित ब्यूरो सदस्य कॉ. रंजीत धर ने कहा, ''पूंजीवाद–साम्राज्यवाद आज मानव सभ्यता को आगे ले जाने में सक्षम नहीं है। दुनिया के तमाम पूंजीवादी–साम्राज्यवादी देश संकटों से घिरे हुए हैं। देश के बहुसंख्यक अवाम, मेहनतकश वर्ग की जिन्दगी बद से बदतर होती जा रही है, जबकि मुट्ठीभर पूंजीपति–उद्योगपति आम जनता के शोषण से मुनाफे का पहाड़ खड़ा कर रहे हैं। आज जरूरत है पूंजीवाद–विरोधी समाजवादी क्रांति के जरिये सत्ता से पूंजीपति वर्ग को बेदखल कर सर्वहारा वर्ग की राजसत्ता कायम करने की।'' कॉ. धर ने समारोह में उपस्थित तमाम लोगों से दुनिया के सर्वोन्नत दर्शन मार्क्सवाद को अपनाकर मानव सभ्यता के विकास में अपनी भूमिका अदा करने की अपील की।

समारोह में शहर के गणमान्य नागरिक, बुद्धिजीवी सहित सैकड़ों की तादाद में पार्टी कार्यकर्ता व समर्थक मौजूद थे। समारोह में मुख्य रूप से एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) के बिहार राज्य सचिव कॉ. शिव शंकर, जिला सचिव कॉ. अर्जुन कुमार शामिल थे।

समारोह की शुरूआत अंतर्राष्ट्रीय गीत से हुई जबकि समापन सर्वहारा के महान नेता और एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) के संस्थापक महासचिव कॉ. शिवदास घोष पर रचित गीत से हुआ। समारोह में कई क्रांतिकारी–जनवादी गीत प्रस्तुत किये गये।

गेहूँ पर बोनस आदि मांगों पर किसानों ने किया प्रदर्शन

रोहतक (हरियाणा): 6 मई को ऑल इण्डिया कृषक खेत मजदूर संगठन ने शहर के छोटूराम पार्क से लघु सचिवालय तक प्रदर्शन किया और उपायुक्त रोहतक को मुख्यमंत्री हरियाणा के नाम अपनी मांगों का एक ज्ञापन दिया। किसान संगठन ने गेहूँ पर 250रु प्रति क्विण्टल बोनस देने और 2005 से लेकर आज तक सेज के नाम पर अधिग्रहित कृषि भूमि किसानों को वापस लौटाने की मांग को जोरदार ढंग से उठाया। विरोध प्रदर्शन की अगुवाई किसान संगठन के प्रदेश अध्यक्ष कॉ. अनूप सिंह मातनहेल व प्रदेश सचिव कॉ. विजय कुमार ने की।

नेताओं ने कहा कि मुख्यमंत्री गेहूँ पर 250रुपये प्रति क्विण्टल बोनस देने की घोषणा करे वरना पूरे प्रदेश में आन्दोलन को व्यापक व तेज किया जाएगा।

मांगों के समर्थन में संगठन के प्रदेश अध्यक्ष कॉ. अनूप सिंह मातनहेल, प्रदेश सचिव कॉ. विजय कुमार, उपाध्यक्ष बाबूराम (कैथल), करतार सिंह (झज्जर); सहसचिव रामकुमार (रेवाड़ी), जयकरण (बहादुरगढ़), जिले सिंह (भिवानी), बलबीर सिंह (महेन्द्रगढ़), जयकरण (सोनीपत), करतार सिंह मलिक (करनाल), नन्दलाल व सूरत सिंह (हिसार) ने किसानों को सम्बोधित किया।

किसानों के हत्याकाण्ड पर रोष जताया

जेपी नगर (यूपी): असमोली विकास खण्ड के गाँव गम्मनपुरा में चार निर्दोष किसानों का अपहरण कर निर्ममता पूर्वक हत्याकाण्ड के विरोध में 11 मई को अखबन्दपुर में एआईडीवाईओ द्वारा शोक सभा की गई, और मृतक किसानों के परिवार के एक सदस्य को सरकारी नौकरी देने, उनके बच्चों को मुफ्त पढ़ाने, उनके परिवारों को मुआवज़ा देने की मांग की गई। सभा का संचालन कॉ. गम्भीर सिंह ने किया। सभा को मुख्य रूप से उ.प्र. एआईडीवाईओ के राज्य अध्यक्ष कॉ. हरकिशोर सिंह तथा संगठन के उपाध्यक्ष कॉ. राजेन्द्र सिंह एडवोकेट, कमलेश चाहल, सोमवती शर्मा, जसवीर सिंह, कैलाश मौर्य ने सम्बोधित किया।

पुलिस–अपराधी गठजोड़ के खिलाफ प्रदर्शन

अखबन्दपुर (यू.पी.): अखबन्दपुर गांव की एक महिला के साथ एक असामाजिक तत्व लगातार अभद्र व्यवहार कर रहा था तथा एक दिन उस महिला के पति की अनुपस्थिति में उसके साथ जोर–जबरदस्ती करने की कोशिश की और अपनी नाकामी के बाद उसे, उसके पति एवं बच्चों को जान से मारने की धमकी तथा गालियाँ दीं। जब कई महीनों तक पुलिस ने उस अपराधी के खिलाफ कोई कार्यावाई नहीं की और महिला की स्थिति पर कोई शिकायत दर्ज नहीं की तब महिला को बेरहमी से पीटने वाले पुलिसकर्मी को बर्खास्त करने, महिला का उत्पीड़न करने वाले अपराधी के खिलाफ तुरन्त कार्यवाही करने तथा अखबन्दपुर गांव में बड़े स्तर पर हो रहे अवैध शराब के कारोबार को रोकने की मांग को लेकर एआईडीवाईओ द्वारा दोबारा एसपी कार्यालय पर एक विशाल प्रदर्शन किया गया। आन्दोलन को तेज करने का प्रस्ताव पारित किया। जनसभा का संचालन कॉ. गम्भीर सिंह ने किया तथा सभा को मुख्य रूप से एआईडीवाईओ के उ.प्र. राज्य अध्यक्ष कॉ. हरकिशोर सिंह, राज्य उपाध्यक्ष कॉ. राजेन्द्र सिंह, सोमवती शर्मा, ऋतु चौधरी, चरन सिंह, शाह आलम, नासिर भाई ने सम्बोधित किया।

मजदूर समस्याओं पर जिला सम्मेलन

गुड़गाँव (हरियाणा): 26 मई को ऑल इण्डिया यूटीयूसी के जिला सम्मेलन का आयोजन हुआ जिसमें जिला भर से श्रमिकों ने उत्साह के साथ हिस्सा लिया। सम्मेलन की अध्यक्षता कॉ. श्रवण कुमार ने की। सम्मेलन को एआईयूटीयूसी के प्रान्तीय अध्यक्ष कॉ. सत्यवान ने सम्बोधित किया।

मूल प्रस्ताव, मांग पत्र व जिला कमेटी के तीनों प्रारूपों को सर्वसम्मति से पास किया गया। 13 सदस्यीय कमेटी बनाई गई जिसमें अध्यक्ष श्रवण कुमार, सचिव रामकुमार, कोषाध्यक्ष बलवान सिंह के अलावा 10 सदस्यों को सम्मेलन ने निर्वाचित किया।

मुख्य वक्तव्य रखते हुए कॉ. सत्यवान ने मजदूर–विरोधी कानूनों के खिलाफ संयुक्त आन्दोलन मजबूत करने और यूनियनों को राजनीति की कक्षा बनाने की अपील की।

मासूम बच्चियों से दुष्कर्म के विरुद्ध प्रदर्शन

आरोन (म.प्र.): नगर में दो मासूम बच्चियों के साथ हुए दुष्कर्म के खिलाफ 30 मई को एक विशाल जनसमूह सड़कों पर उतरा। पुराना चौराहा पर युवा संगठन डीवाईओ, छात्र संगठन डीएसओ, एवं महिला संगठन एआईएमएसएस द्वारा एक विरोध प्रदर्शन किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में महिलाएं एवं शहर के गणमान्य नागरिक शामिल हुए। घटना की उच्च स्तरीय जांच कर आरोपी को सख्त सजा देने, शराब के ठेकों को शहर के बाहर करने, स्मैक के कारोबार को बन्द करने और. कम्प्यूटर, मोबाइल सेण्टरों पर अश्लील फिल्मों के कारोबार पर सख्त कार्रवाई करने की मांगें रखीं गई। प्रदर्शन को संगठन के स्थानीय प्रभारी कॉ. मनीष श्रीवास्तव, डीवाईओ के जितेन्द्र, एआईएमएसएस की स्थानीय प्रभारी माधवी जैन एवं शमा परवीन व डीएसओ के नीलेश बैरागी आदि ने सम्बोधित किया। प्रदर्शन के बाद एसडीएम महोदय को ज्ञापन सौंपा गया। प्रदर्शन की अगुआई डीएसओ जिला महासचिव प्रमोद नामदेव ने की।

शहीद प्रीतिलता वाद्देदार जयंती पर सभा

इलाहाबाद (उ. प्र.) : 5 मई को एआईएमएसएस द्वारा भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन की गैर समझौतावादी धारा की शहीद प्रीतिलता वाद्देदार की जयंती महिलाओं पर बढ़ते अपराधों के खिलाफ प्रतिवाद दिवस के रूप में अल्लापुर में मनायी गयी।

सभा में ऑल इण्डिया महिला सांस्कृतिक संगठन की संयोजिका रश्मि मालवीय ने अपने वक्तव्य में कहा कि अंग्रेज तो चले गये, लेकिन आज आज़ादी के 65 साल बाद भी देश की हालत बद से बदतर होती जा रही है विशेष रूप से जिस तरह आज बलात्कार की घटनाएं तेजी से बढ़ रही हैं, उसमें किसी भी महिला का सम्मान सुरक्षित नहीं रह गया है। इसलिए आज महिलाओं को साहस के साथ घर से बाहर आकर संगठित होकर एक सशक्त आन्दोलन खड़ा करना होगा।

सभा में लता शर्मा ने प्रीतिलता के जीवन–संघर्ष और उनकी भावनाओं को बहुत सजीवता के साथ प्रस्तुत किया। झरना मालवीय ने अन्य क्रांन्तिकारी महिलाओं के संघर्ष के इतिहास को बताते हुए आज फिर उसी तरह के संघर्ष पर बल दिया। कल्याणी रायचौधरी और ज्ञानशीला ने प्रीतिलता द्वारा शहादत से पहले अपनी मां के नाम लिखा बहुत ही मार्मिक पत्र पढ़ कर सुनाया। प्रियंका सिंह और आशू ठाकुर ने महिलाओं पर आधारित क्रांतिकारी गीतों की प्रस्तुति की। राजेश्वरी श्रीवास्तव ने आगन्तुकों को धन्यवाद दिया। संचालन सुमन लता शुक्ला ने किया। सभा में सुष्मिता राय, संध्या मिश्रा, रेनू गुप्ता सहित बड़ी संख्या में महिलाओं ने हिस्सा लिया।

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) की ओर से कॉ. गिरिजेश्वर सिंह द्वारा 3ए/38, डब्ल्यू.ई.ए., करोल बाग, नई दिल्ली-5 से संपादित व प्रकाशित तथा परम्परा प्रिंटिंग प्रेस, बी-70/83, इण्डस्ट्रियल एरिया, लॉरेंस रोड, दिल्ली-35 से मुद्रित, दूरभाष:011-25726631, Email: sarvaharadrishtikon@gmail.com; sarvaharadrishtikon@yahoo.com